



धूँध की बगावत

प्रत्येक रविवार को प्रकाशित हिन्दी (साप्ताहिक समाचार पत्र)

वर्ष : 23

अंक : 12

गोरखपुर

17 सितम्बर 2023

पृष्ठ : 08

मूल्य: 2/-

आतंकियों के खिलाफ निरन्तर अभियान की आवश्यकता



जम्मू-कश्मीर के अन्तर्नाग में बुधवार को आतंकियों से मुठभेड़ में भारतीय सेना के कर्नल, मेजर सहित चार जांबाज की शहादत अत्यन्त दुःखद और दुर्भाग्यपूर्ण होने के साथ ही देश की यह अपूरणीय क्षति भी है। इस घटना से सभी मर्माहत हैं। देश के लिए शहादत देनेवालों में 19 आरआर कमान के कमान अधिकारी कर्नल मनप्रीत सिंह, मेजर आशीष धौनक और डीएसपी हुमायूँ भट और एक जवान शामिल हैं। हमले की जिम्मेदारी लश्कर-ए-तैयबा से जुड़े प्रतिबन्धित आतंकी संघटन द रजिस्ट्रेंट फ्रण्ट (टीआरएफ) ने ली है।

कमान अधिकारी कर्नल मनप्रीत सिंह चण्डीगढ़ के निवासी हैं, जो टीम का नेतृत्व कर रहे थे। उनके साथ पानीपत के मेजर आशीष धौनक भी थे। आतंकियों और सुरक्षाबलों में मंगलवार शाम से मुठभेड़ शुरू हुई थी। बुधवारको सूचना मिली कि आतंकी पास के इलाके में छिपे हैं। इसके बाद कर्नल मनप्रीत सिंह के नेतृत्व में दोबारा आपरेशन प्रारम्भ हुआ। आतंकियों ने अंधाधुन्ध फायरिंग की, जिसमें कर्नल मनप्रीत के साथ मेजर आशीष और डीएसपी हुमायूँ भट गम्भीर रूप से घायल हो गये। सभी को अस्पताल में भर्ती कराया गया लेकिन दुर्भाग्य से उनके प्राणों की रक्षा नहीं की जा सकी। गुरुवार को पूरे क्षेत्र में आतंकियों की खोजबीन के लिए अभियान चलाया गया। ऐसी भी सूचनाएं मिली हैं कि हमलावर टीआरएफ ने प्रतिशोध के चलते इस बड़ी घटना को अंजाम दिया है।

पुछ के मोहम्मद रियाज की मौत का बदला लेने के लिए टीआरएफ ने यह हमला किया है। रियाज पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में मारा गया था। टीआरएफ ने ही चार अगस्त को कुलगाम में हमला किया था। इस हमले में भी तीन जवान शहीद हो गये थे।

दक्षिणी कश्मीर में विगत डेढ़ माह के दौरान सुरक्षाबलों और आतंकियों के बीच मुठभेड़ की यह तीसरी घटना है। इसके पूर्व अगस्त के प्रथम सप्ताह में हालन क्षेत्र में हुई मुठभेड़ में तीन सैन्यकर्मी शहीद हो गये थे। इन घटनाओं से प्रतीत होता है कि आतंकी संघटन जम्मू-कश्मीर के विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय है। वैसे आतंकी गतिविधियों में अवश्य कमी आयी है लेकिन जिस प्रकार से छिटपुट इनकी सक्रियता बढ़ी है वह गम्भीर चिन्ता की बात है। आतंकियों के खिलाफ निरन्तर अभियान चलाते रहने की आवश्यकता है। सेना और पुलिस बल को सदैव सतर्कता बरतनी होगी। जम्मू-कश्मीर में आतंकी गतिविधियों को बढ़ावा देने में पाकिस्तान सरकार की बड़ी भूमिका है। विश्वपटल पर भारत की बढ़ती साख और प्रतिष्ठा से दोनों पड़ोसी देश पाकिस्तान और चीन बौखला गये हैं। जी-20 की अभूतपूर्व सफलता से भी दोनों देशों की परेशानी बढ़ी है और वे भारतविरोधी गतिविधियों को बढ़ावा दे सकते हैं। इसलिए भारत को सतत सतर्कता बरतनी होगी।



पीएम विश्वकर्मा योजना का शुभारंभ आज

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कल विश्वकर्मा जयंती के अवसर पर नई दिल्ली में पीएम विश्वकर्मा योजना का शुभारंभ करेंगे।

इस योजना का मुख्य उद्देश्य उत्पादों और सेवाओं को सर्वशुलभ बनाना और गुणवत्ता में सुधार करना है। इसके अतिरिक्त इस घरेलू और वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं के साथ जोड़ना भी है। केंद्र सरकार इस योजना में 13 हजार करोड़ रुपए खर्च करेगी। इसके तहत बायोमेट्रिक आधारित पीएम विश्वकर्म योजना पोर्टल का उपयोग कर जन सेवा केंद्रों के माध्यम से विश्वकर्मा का मुक्त पंजीकरण किया जाएगा। उन्हें पीएम विश्वकर्मा प्रमाण पत्र और पहचान पत्र मूलभूत उन्नत प्रशिक्षण से जुड़े कौशल उन्नयन 15 हजार रुपये का टूल किट प्रोत्साहन फर्स्ट प्रतिशत की रियलिटी ब्याज दर पर पहली किस्त में एक लाख

रुपये और दूसरी किस्त में दो लाख रुपए की ऋण सहायता डिजिटल लेनदेन के लिए प्रोत्साहन और विपणन सहायता प्रदान की जाएगी। विश्वकर्म योजना के शुभारंभ के अवसर पर प्रदेश के पांच स्थान जयपुर जोधपुर उदयपुर कोटा और बीकानेर में कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

जयपुर में आयोजित कार्यक्रम में सांसद कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़ और रामचरण बोहरा तथा राज्य की कृषि मंत्री लालचंद कटारिया मौजूद रहेंगे। उदयपुर में आयोजित कार्यक्रम केंद्रीय जल शक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत के मुख्य अतिथि में होगा। कोटा में आयोजित कार्यक्रम में केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री कैलाश चौधरी बीकानेर में केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग राज्य मंत्री अनुप्रीया पटेल और जोधपुर में केंद्रीय कोर्ट और जहाज रानी राज्य मंत्री शांतनु ठाकुर उपस्थित रहेंगे

नयी दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी रविवार को 73 साल के हो गए और उनके जन्मदिन के अवसर पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू और अन्य गणमान्य व्यक्तियों एवं नेताओं ने उन्हें शुभकामनाएं दीं। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) अपने प्रमुख नेता के जन्मदिन को चिह्नित करने के लिए कई कल्याणकारी पहलों के साथ समाज के विभिन्न वर्गों तक पहुंच बनाने के लिए रविवार से आगामी दो अक्टूबर को महात्मा गांधी जयंती तक सेवा पखवाड़ा शुरू करेगी। प्रधानमंत्री को शुभकामनाएं देते हुए राष्ट्रपति ने कहा कि वह कामना करती हैं कि मोदी अपनी दूरदर्शिता और मजबूत नेतृत्व से अमृत काल के दौरान हर क्षेत्र में भारत के विकास का मार्ग प्रशस्त करें। वहीं, गृह मंत्री अमित शाह ने मोदी को नये भारत का वास्तुकार बताते हुए कहा कि प्रधानमंत्री ने देश की प्राचीन विरासत के आधार पर एक भव्य और आत्मनिर्भर भारत की मजबूत नींव रखी है। शाह ने कहा, पार्टी संगठन हो या सरकार, हमें मोदी जी से हमेशा राष्ट्रहित के सर्वोपरि होने की प्रेरणा मिलती है। उन्होंने कहा कि वह ऐसे अद्वितीय नेता के नेतृत्व में देश की सेवा करने का अवसर मिलना अपना सौभाग्य मानते हैं। भाजपा अध्यक्ष जे पी नड्डा ने कहा कि प्रधानमंत्री ने भारतीय संस्कृति की वैश्विक प्रतिष्ठा, लोगों के बहुआयामी विकास और राष्ट्र की सार्वभौमिक प्रगति को मूर्त रूप दिया है। उन्होंने सोशल मीडिया मंच एक्स

पर लिखा, हमारा अंत्योदय (सबसे वंचित लोगों का उत्थान) मिशन हर गांव और समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुंच गया है और एक विकसित भारत के संकल्प का मंत्र बन गया है। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि मोदी ने न केवल भारत को एक नयी पहचान दी है, बल्कि दुनिया में उसका कद और प्रतिष्ठा भी बढ़ाई है। उन्होंने मोदी के अच्छे स्वास्थ्य एवं दीर्घायु जीवन की कामना करते हुए कहा, प्रधानमंत्री ने भारत के विकास को नयी ऊंचाइयों पर पहुंचाया है। रविवार को विश्वकर्मा जयंती होने के कारण मोदी अपनी सरकार की महत्वाकांक्षी योजना पीएम विश्वकर्मा की भी शुरुआत करेंगे, जिसका मकसद कारीगरों और शिल्पकारों के अलावा पारंपरिक व्यवसायों से जुड़े लोगों की मदद करना है। चूंकि, इन व्यवसायों से जुड़े ज्यादातर लोग अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) से आते हैं, इसलिए 13,000 करोड़ रुपये के परिव्यय वाली इस योजना को राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण ओबीसी वर्ग तक पहुंच बनाने की सत्तारूढ़ भाजपा की कोशिशों के तौर पर भी देखा जा रहा है। मोदी का रविवार को राष्ट्रीय राजधानी के द्वारका में यशोभूमि नामक इंडिया इंटरनेशनल कन्वेंशन एंड एक्सपोजे सेंटर (आईआईसीसी) के पहले चरण का उद्घाटन करने और द्वारका सेक्टर-21 से द्वारका सेक्टर-25 तक दिल्ली एयरपोर्ट मेट्रो एक्सप्रेस की भी शुरुआत करेंगे, जिसका लाइन के विस्तार का उद्घाटन करने का भी कार्यक्रम है।



योगी ने दी प्रधानमंत्री को जन्मदिन की बधाई

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को उनके 73वें जन्मदिन पर बधाई और शुभकामनाएं दीं। उन्होंने सोशल मीडिया पर अपने आधिकारिक हैंडल के साथ साथ कई समाचार पत्रों में लेख के माध्यम से पीएम मोदी के देश के लिए किए गए कार्यों, उनके विजन और समर्पण की प्रशंसा की। अपनी पोस्ट में सीएम योगी ने लिखा, 'मां भारती के परम उपासक, 'नए भारत' के शिल्पकार, 'विकसित भारत' के स्वप्नद्रष्टा, 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' के प्रति संकल्पित, विश्व के

सर्वाधिक लोकप्रिय राजनेता, देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी को जन्मदिन की हार्दिक बधाई! 'विकसित भारत' के निर्माण के लिए आपका समर्पण और विजन अतुलनीय है। प्रभु श्री राम की कृपा से आपको दीर्घायु एवं उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति हो, आपका यशस्वी नेतृत्व हम सभी को प्राप्त होता रहे, यही प्रार्थना है।' अपनी पोस्ट के साथ ही सीएम ने पीएम को समर्पित एक टैपलेट भी साझा किया जिसमें उन्होंने पीएम के मार्गदर्शन में देश भर में शिक्षा, स्वास्थ्य, इन्फ्रास्ट्रक्चर, गरीब कल्याण, सुरक्षा, शासन-प्रशासन जैसे क्षेत्रों में हुए उल्लेखनीय कार्यों और कीर्तिमानों के लिए पीएम मोदी को श्रेय दिया।



कलाकारों को उपराष्ट्रपति ने किया सम्मानित

नई दिल्ली। उपराष्ट्रपति जगदीप धन खड़ने नई दिल्ली में 84 कलाकारों को संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार प्रदान किया। विशेष उपलब्धि पुरस्कार देश भर में 75 वर्ष से अधिक आयु के उन कलाकारों को प्रदान किया गया है जिन्हें अभी तक कोई राष्ट्रीय सम्मान नहीं मिला इनमें बाड़मेर जिले के दो लोक कलाकार(ज्योति खान और हकीक खान) शामिल हैं। इन कलाकारों को कल पुरोधा सम्मान से नवाजा गया है।

सूत्र अनुसार सम्मानित होने वाले लोक कलाकारों में बाड़मेर जिले के रहने वाले अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त अलगोजा वादक दो देखन और कमायन वादक हकीक खान शामिल है। कल के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए दोनों कलाकारों को यह प्रतिष्ठित सम्मान प्रदान किया गया है।

गौर तलब है कि तुझे खान के अलगोजा वतन से ही सन 1982 में नई दिल्ली में आयोजित एशियाई खेलों का शुभारंभ हुआ था। आगामी मंगलवार को नए संसद भवन के सेंट्रल विस्ता में आयोजित होने वाले कार्यक्रम में दो देखन अलगोजा की प्रस्तुति देंगे एक साथ जिले के दो कलाकारों को प्रतिष्ठित सम्मान मिलने के बाद जिले के सभी कलाकारों में खुशी का माहौल है।

संगीत नाटक अकादमी अमृत पुरस्कार एक ऐसा सम्मान है जो संगीत नाटक क्षेत्र के उत्कृष्ट कलाकारों के साथ-साथ शिक्षकों और विद्वानों को प्रदान किया जाता है। इस पुरस्कार के तहत ताम्रपत्र और रंग वस्त्र के साथ-साथ एक लाख रुपये की नगद राशि दी जाती है।

नए स्कूल खोलने की मिली मंजूरी

नई दिल्ली। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने आज शनिवार को 23 नए स्कूलों को मंजूरी प्रदान की है। साझेदारी पल के अंतर्गत 42 नए सैनिक स्कूल खोले जा चुके हैं। सरकार ने साझेदारी पहल के अंतर्गत नए स्कूल खोलने की मंजूरी प्रदान की है इसमें गैर सरकारी संगठन निजी स्कूल और राज्य सरकारों के साथ साझेदारी में कक्षा 6 से सैनिक स्कूल खोले जा रहे हैं।

जो लौट के घर न आए

अधिकारियों ने बताया कि गारोल इलाके में आतंकियों के खिलाफ अभियान मंगलवार शाम को शुरू हुआ था, लेकिन रात में इसे रोका दिया गया था।



जान के दुश्मन बनते आवारा कुत्ते

कुत्तों का मानव के विकास क्रम के साथ साहचर्य का एक अनुठा संबंध रहा है। यह उनके कल्याण के लिए जिम्मेदार होने की नैतिक दुविधा ईसान के सामने पैदा करता है, लेकिन इसके अपने खतरे भी हैं क्योंकि कुत्तों का विकास भेड़िये और उसकी प्रवृत्ति से जुड़ा है। भारत के लिए भले ही यह एक अबूझ पहेली हो, लेकिन बाकी दुनिया के अधिकांश हिस्सों ने आवारा जानवरों के अधिकारों को मान्यता नहीं दी है। यदि ऐसे पशुओं को पट्टे से बांध कर रखा जाता है और पंजीकृत किया जाता है, तो उसे पालने वाले उसकी देखभाल करने के लिए बाध्य माने जाते हैं। यदि ऐसा नहीं है, तब अंतिम उपाय के रूप में राज्य सार्वजनिक स्वास्थ्य के हित में उन्हें मार देने के लिए बाध्य है। आवारा कुत्तों को पशु क्रूरता निवारण अधिनियम, 1960 और अधिनियम की धारा 38 के तहत अधिनियमित नियमों, विशेष रूप से पशु जन्म नियंत्रण (कुत्ते) नियम, 2001 के तहत संरक्षित किया जाता है। यह किसी व्यक्ति, आरडब्ल्यूए, या संपत्ति प्रबंधन के लिए अवैध बनाता है कुत्तों को हटाना या स्थानांतरित करना। सभी आवारा कुत्तों में से केवल 15प्रतिशत को ही टीका लगाया गया है। भारत की आवारा आबादी बहुत बड़ी है, गोद लेने की गति बहुत धीमी और सीमित है क्योंकि बहुत से लोग केवल विदेशी नरल के कुत्ते ही चाहते हैं। पशु क्रूरता निवारण अधिनियम और पशु जन्म नियंत्रण (कुत्ते) नियम, 2001 (अद्यतन किया जा रहा है) का उद्देश्य आवारा पशुओं की आबादी को सीमित करना है लेकिन सार्वजनिक सुरक्षा में सुधार में इनका कोई लाभ नहीं होता।

भारत के मीडिया में लगातार ‘आवारा कुत्तों का खतरा’ सुर्खियों में रहता है। पिछले पांच वर्षों से, 300 से अधिक लोग – ज्यादातर गरीब और ग्रामीण परिवारों के बच्चे– कुत्तों द्वारा मारे गए हैं। 2017 के एक अध्ययन से पता चला है कि ग्रामीण क्षेत्रों में बेघर कुत्ते भी वन्यजीवों के लिए विनाशकारी हो सकते हैं। इसके बावजूद इन खबरों के प्रति समाज बेसुध बना रहता है। कभी–कभार यह जड़ता कुछ भयावह घटनाओं के साथ टूट जाती है। राज्यों, केंद्र, न्यायपालिका, नगर पालिका और गैर–सरकारी संगठनों द्वारा इस संकट की स्वीकृति के बावजूद यह समस्या बढ़ती ही जा रही है।



प्रस्तावित मसौदा नियम, या पशु जन्म नियंत्रण नियम, 2022, नसबंदी और टीकाकरण में केवल प्रक्रियात्मक बदलावों को सामने रखते हैं, केवल “लाइलाज बीमार और घातक रूप से घायल” कुत्तों को ही मारने की इजाजत देते हैं, और रेजिडेंट वेलफेयर एसोसिएशनों को अपने इलाके के में आवारा जानवरों को खिलाने का जिम्मेदार मानते हैं। पीसीए और एबीसी के नियम यह स्वीकार करते हैं कि अनियंत्रित आवारा कुत्तों को रोका जाना चाहिए, हालांकि यह समस्या की भयावहता के लिहाज से मायने नहीं रखता क्योंकि प्रत्येक 100 भारतीयों पर लगभग एक आवारा पशु है। लगभग 21, 000 पर, रेबीज से होने वाली सभी मौतों में से एक तिहाई से अधिक भारत में होती है। पिछले पांच वर्षों से, 300 से अधिक लोग – ज्यादातर गरीब और ग्रामीण परिवारों के बच्चे – कुत्तों द्वारा मारे गए हैं। 2017 के एक अध्ययन से पता चला है कि ग्रामीण क्षेत्रों में बेघर कुत्ते भी वन्यजीवों के लिए विनाशकारी हो सकते हैं। 80 से अधिक प्रजातियां, जिनमें से 30 से अधिक लुप्तप्राय सूची में हैं, जंगल क्षेत्रों में कुत्तों द्वारा लक्षित की गई थीं। कुत्ते जो अकेले बाहर हैं वे सड़क पर दौड़ते समय दुर्घटना का कारण बन सकते हैं, जिससे उन्हें और

अन्य लोगों को चोट भी लग सकती है। आवारा कुत्ते कचरा बैग खोलने का आनंद लेते हैं और वे कचरे को बिखरेने का कारन हो सकते हैं और पर्यावरण और सड़क के चारों ओर बिखरा हुआ कचरा दूर दूर तक फैला सकते हैं। आवारा कुत्ते भोजन के लिए पड़ोस को मैला करेंगे और खुले कचरे के डिब्बे तोड़ सकते हैं और बगीचों को नुकसान कर सकते हैं। जो लोग आवारा कुत्तों को खाना खिलाते हैं, उन्हें उनके टीकाकरण के लिए जिम्मेदार बनाया जा सकता है और अगर किसी पर जानवर का हमला होता है तो वह लागत वहन कर सकता है। प्रत्येक रेजिडेंट वेलफेयर एसोसिएशन को पुलिस डॉग स्व्वायड के परामर्श से “गार्ड एंड डॉग पार्टनरशिप” बनाना चाहिए। ताकि कुत्तों को प्रशिक्षित किया जा सके और फिर भी वे कॉलोनी के निवासियों के अनुकूल हों। नगर निगम, निवासी कल्याण संघ और स्थानीय कुत्ते समूहों को पशुओं का टीकाकरण और बंध्याकरण करना चाहिए। बीमार जानवरों, आक्रामक जानवरों को मौत के घाट उतारना होगा। एकमात्र दीर्घकालिक समाधान सख्त पालतू स्वामित्व कानूनों को लागू करना है, लोगों को हर जगह लापरवाही से कुत्तों को खाना खिलाना प्रतिबंधित करना और घरेलू कुत्तों के लिए

सुविधाएं स्थापित करना है। अधिक स्टाफ और फंड की सख्त जरूरत है। नसबंदी के अलावा गोद लेने पर भी ध्यान देना चाहिए। और हमें इस संकट को मानवीय रूप से हल करने में मदद करने के लिए कुछ करुणा दूढ़नी चाहिए। जब तक सड़कों पर कुत्ते बेघर हैं, लोगों और कुत्तों के बीच सामंजस्यपूर्ण सह–अस्तित्व के साथ रेबीज मुक्त भारत का विचार एक यूटोपियन सपना होगा। कुत्तों को बेघर रखना कुत्तों के लिए बुरा है, लोगों के लिए बुरा है और वन्यजीवों के लिए बुरा है। कमजोर (गरीब और उनके बच्चे) आदमी की उपचार तक पहुंच सुनिश्चित करने के लिहाज से भारत में बुनियादी ढांचे और तंत्र की कमी है। ऐसे मे, नसबंदी और टीकाकरण के साथ कुत्तों की संख्या कम होने की उम्मीद करना एक कोरी कल्पना है। भारत ने 2030 तक रेबीज को खत्म करने की प्रतिबद्धता जताई है, लेकिन आवारा कुत्तों से खतरे को सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट के रूप में जब तक सबसे पहले मान्यता नहीं दे दी जाती तब तक भारत के निर्धनतम लोग सुस्त नारेबाजी की बलिवेदी पर सुरक्षित सार्वजनिक स्थानों पर अपने अधिकार से महरूम होते रहेंगे।

–प्रियंका सौरभ



विदेशी राष्ट्राध्यक्षों को अपने हस्तनिर्मित उत्पाद उपहार स्वरूप दिये जाने से प्रसन्न हैं देशभर के कारीगर



नई दिल्ली। हाल ही में राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में संपन्न जी20 शिखर सम्मेलन के दौरान आये दुनिया भर के राष्ट्राध्यक्षों और अन्य नेताओं को हस्तनिर्मित कलाकृतियों और उत्पादों के विशेष रूप से तैयार संग्रह उपहार में दिये गये। यह उपहार भारत की समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं को दर्शाते हैं। हम आपको बता दें कि यह उपहार देश के कुशल कारीगरों द्वारा बहुत सावधानीपूर्वक हाथ से तैयार किए गए थे। उपहार में दी गई वस्तुओं में कश्मीर के केसर, पेको दार्जिलिंग और नीलगिरि चाय, अराकू कॉफी, कश्मीरी पश्मीना

शॉल, सुंदरबन मल्टीपलोरा मैंग्रोव शहद और उत्तर प्रदेश के कन्नीज के जिघराना इत्र शामिल हैं। विदेशी मेहमानों को उपहार में दिए गए कुछ उत्पाद सदियों पुरानी परंपरा के हैं और अपनी अद्वितीय कारीगरी और गुणवत्ता के लिए दुनिया भर में पसंद किए जाते हैं। इनमें खासतौर पर कश्मीरी पश्मीना और पेपर माचे पेंटिंग शामिल हैं। कश्मीरी कारीगरों ने कहा कि हम बेहद प्रसन्न हैं कि सरकार ने हमें अपने उत्पादों को विदेशी राष्ट्राध्यक्षों तक पहुंचाने का अवसर दिया। यही नहीं, भारत मंडपम के पास लगाये गये शिल्प

बाजार में भी दक्षिण भारत की साड़ियों से लेकर पूर्वोत्तर की हस्तनिर्मित वस्तुओं तक— भारत के समृद्ध और विविध सांस्कृतिक उत्पादों को प्रदर्शित किया गया था। सम्मेलन स्थल ‘भारत मंडपम’ के परिसर में स्थापित ‘शिल्प बाजार’ में ताज महल और जनजातीय कलाओं की एक संगमरमर की प्रतिकृति भी प्रदर्शित की गयी थी। प्रतिनिधियों और अन्य आगंतुकों को ‘एक जिला, एक उत्पाद’ और जीआई–टैग वाली वस्तुओं पर ध्यान केंद्रित करते हुए पूरे भारत के हस्तशिल्प उत्पाद दिखाए गये। प्रदर्शनी में जी20 लोगो और थीम ‘वसुधैव कुटुम्बकम— वन अर्थ’, वन फैमिली, ‘वन पयूचर’ लगा असम का ‘गमोसस’ प्रदर्शित किया गया था। अन्य राज्यों के उत्पादों के अलावा तमिलनाडु की रेशमी साड़ियां और बिहार की मधुबनी कला–मुद्रित कपड़े भी प्रदर्शन के लिए रखे गए थे। हम आपको बता दें कि राष्ट्रीय राजधानी स्थित प्रगति मैदान के नवनिर्मित भारत मंडपम में नौ से दस सितंबर तक जी20 शिखर सम्मेलन का आयोजन हुआ था। इसमें अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन, ब्रिटेन के प्रध. नमंत्री ऋषि सुनक और फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों सहित विश्व के कई अन्य नेताओं ने हिस्सा लिया था। अधिकारियों ने कहा कि भारत सरकार ने विभिन्न देशों से आए नेताओं को हस्तनिर्मित कलाकृतियों और उत्पादों के विशेष रूप से तैयार संग्रह उपहार में दिये, जो भारत की समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं के बारे में बताता है।

अधिक रक्तस्राव होने के कारण मृत्यु हो गई। अधिकारियों ने कहा कि लापता सैनिक के बारे में तुरंत पता नहीं चल पाया है और आशंका है कि वह गंभीर रूप से घायल हो गए होंगे। पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) दिलबाग सिंह ने पुलिस और सेना के बहादुर अधिकारियों की मौत पर शोक व्यक्त किया। उन्होंने एक संदेश में कहा कि दोषियों को जल्द ही न्याय के कठघरे में लाया जाएगा। आतं. कवादी संगठन लश्कर—ए—तैयबा के छद्म समूह प्रतिबंधित रेजिस्टेंस फ्रंट ने इस हमले की जिम्मेदारी ली है। अधिकारियों का मानना है कि ये उन्हीं आतंकवादियों का समूह है, जिन्होंने चार अगस्त को कुलगाम जिले के हलाण वनक्षेत्र के ऊंचाई वाले इलाके में सेना के जवानों पर हमला किया था, जिसमें तीन जवान शहीद हो गए थे। अधिकारियों ने बताया कि गारोल इलाके में आतंकियों के खिलाफ अभियान मंगलवार शाम को शुरू हुआ था, लेकिन रात में इसे रोका दिया गया था। अधिकारियों ने बताया कि एक ठिकाने पर आतंकवादियों को देखे जाने की सूचना के बाद आज सुबह फिर उनकी (आतंकवादियों) तलाश शुरू की गई। अपने दल का नेतृत्व करते हुए कर्नल सिंह ने आतंकवादियों पर हमला बोला। हालांकि, आतंकवादियों की गोलीबारी में वह गंभीर रूप से घायल हो गए। 12वीं सिख लाइट इन्फैंट्री (एलआई) से संबद्ध कर्नल सिंह को सेना पदक से भी सम्मानित किया गया था। धौनैक 15वीं सिख एलआई से अधिकारियों ने बताया कि धौनैक और भट को भी गोलियां लगीं जिससे वे गंभीर रूप से घायल हो गए। जीओसी 15वीं कोर लेफ्टिनेंट जनरल राजीव घई और डीजीपी दिलबाग सिंह सहित सेना और पुलिस के वरिष्ठ अधिकारी, स्थिति का आकलन करने के लिए मौके पर पहुंचे। इससे पहले कश्मीर जोन पुलिस ने सोशल मीडिया मंच ‘एक्स’ (पूर्व में ट्विटर) पर एक पोस्ट में कहा था, “अनंतनाग के कोकेरनाग इलाके में मुठभेड़ शुरू हुई है। सेना और जम्मू कश्मीर पुलिस के अधिकारी घायल हो गए हैं। विवरण बाद में मुहैया कराया जाएगा।” कश्मीर स्थित 15वीं कोर ने भी जानकारी दी थी कि “आतंकवादियों की मौजूदगी की विशिष्ट खुफिया जानकारी के आधार पर 12–13 सितंबर की मध्यरात्रि को क्षेत्र गारोल, अनंतनाग में भारतीय सेना और जम्मू कश्मीर पुलिस द्वारा एक संयुक्त अभियान शुरू किया गया था। आमना–सामना होने पर गोलीबारी शुरू हुई। सेना के दो कर्मी और जम्मू कश्मीर पुलिस का एक जवान घायल हो गए। अभियान जारी है।” शाम को, पुलिस महानिदेशक दिलबाग सिंह, अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक (कश्मीर) विजय कुमार सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने शहीद पुलिस उपाधीक्षक को पुष्पांजलि अर्पित की। यह हमला ऐसे समय हुआ जब एक दिन पहले ही जम्मू क्षेत्र के राजौरी में पीर पंजाल के दक्षिण में एक मुठभेड़ में सेना का एक जवान शहीद हो गया था जबकि सेना की 6 वर्षीय मादा लैब्राडोर भी अपने ‘हैंडलर’ को बचाने के दौरान जान गंवा बैठी थी।

नकली दवाओं का वितरण गम्भीर चिन्ता का विषय



निजी स्वार्थ के वशीभूत धन अर्जित करने के लिए मानवीय मूल्यों का कितनी तेजी से ह्रास हो रहा है इसे सहजता के साथ समझा जा सकता है कि आज जीवनरक्षक नकली दवाओं के उत्पादन और बिक्री से भी लोगों को परहेज नहीं है। कैंसर जैसी घातक बीमारी की नकली दवा की उपलब्धता मानवीय संवेदनहीनता की पराकाष्ठा है। देश में लीवर की दवा ‘डेफिटेलियो’ और कैंसर की दवा ‘एडसेट्रिक (इंजेक्शन) के नकली संस्करण बिक रहे हैं।

विश्व स्वास्थ्य संघटन (डब्ल्यूएचओ) की इन दोनों दवाओं के नकली संस्करणों पर चेतावनी जारी किए जाने के बाद इस समस्या को गम्भीरता से संज्ञान में लेते हुए देश के औषधि महानियंत्रक (डीसीजीआई) ने सभी राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेशों को इनकी बिक्री और वितरण पर पैनी नजर रखने के निर्देश दिए हैं। डीसीजीआई ने इस बात का खुलासा किया है कि ये उत्पाद अकसर रोगियों को उपलब्ध कराये जाते हैं और अनियमित आपूर्ति श्रृंखलाओं (मुख्य रूपसे आनलाइन माध्यम) में वितरित होते हैं। डब्ल्यूएचओ ने टाकेडा फार्मास्युटिकल कम्पनी लिमिटेड की निर्मित एडसेट्रिस इंजेक्शन 50मिग्रा के कई नकली संस्करणों की पहचान करते हुए कहा है कि भारत सहित चार देशोंमें इन नकली दवाओंकी मौजूदगीका पता लगा है। इसी तरह लीवरकी दवा डेफिटेलियो (डिफाइब्रोटाइड) 8० मिली ग्रामके नकली संस्करण को लेकर चेतावनी जारी की गई है।

डब्ल्यूएचओके अनुसार कमसे कम आठ बैच संख्या में. इन दोनों दवाइयों के नकली संस्करण मौजूद हैं। यह नकली उत्पाद भारतमें अप्रैल–2023 और तुर्किये में जुलाई 2023 में पाया गया है। देश में नकली दवाओं का वितरण गम्भीर चिन्ता का विषय है। बड़ा प्रश्न यह है कि जब प्राणघातक बीमारियों की नकली दवाएं मिल रही हैं तो अन्य दवाओं की स्थिति क्या होगी। सरकार को इसके विरुद्ध कड़े दण्ड का प्रावधान करने की जरूरत है तभी इसपर अंकुश लगाया जा सकता है।

हिन्दी के विकास में गैर—हिन्दी भाषियों की उल्लेखनीय भूमिका

हिन्दी भारत के अधिकांश लोगों द्वारा जानने—बोलने—समझने के कारण यह न केवल भारत की संपर्क भाषा है, बल्कि पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक यह सभी के संप्रेषण की माध्यम भाषा भी है। गुलामी की बेड़ियों में जकड़े भारत ने जब आजादी के सपने देखने शुरू किए तो आजादी के दीवानों के बीच चर्चा का विषय था कि आजाद भारत की संपर्क और राजभाषा क्या होगी? लंबे विचार—विमर्श के बाद लगभग स्वर बना कि स्वाधीन भारत की संपर्क भाषा हिन्दी ही हो सकती है। इस विचार को आगे बढ़ाने एवं संपूर्ण देश को जागरूक करने में गैर—हिन्दी भाषियों का भी उल्लेखनीय योगदान रहा।

‘हिन्दी दिवस’ के बहाने आज गैर—हिन्दी प्रांत के हिन्दी प्रचार—प्रसार आंदोलन के उन विचारकों—चिंतकों का स्मरण किया जाना जरूरी है, जिन्होंने राष्ट्र—भावना से प्रेरित होकर हिन्दी को उसका वास्तविक स्थान दिलाने में अपनी प्रखर आवाज बुलंद की और हिन्दी को राष्ट्रीय एकता के संवाहक के रूप में स्वीकार किया।

तमिलनाडु में द्रविड़ मुन्नेत्र कड़गम के संस्थापक यूवी कृष्ण नायर ने अपने घर में हिन्दी का प्रथम प्रचारक विद्यालय खोला। आंध्र प्रदेश के पी. वेंकट राव, मोटूरी सत्यनारायण, जंघाल शिव शास्त्री जैसे हिन्दी सेवियों हिन्दी सीखकर अपने प्रदेश में हिन्दी का प्रचार किया। सभाओं, अधिवेशनों और पत्र—पत्रिकाओं के माध्यम से लोगों को हिन्दी सीखने हेतु प्रेरित किया। इससे अनुकूल स्थानों वातावरण का निर्माण हुआ। हिन्दी व्याकरण की पुस्तकें लिखी गईं। चेन्नई में तत्कालीन मुख्यमंत्री राजगोपालाचारी ने हाईस्कूल में हिन्दी अनिवार्य कर दी। परिणामस्वरूप धीरे—धीरे विद्यालयों मह. विद्यालयों में हिन्दी पठन—पाठन आरंभ हुआ। स्वतंत्रता के पश्चात ‘दक्षिण भारत प्रचार सभा’ में शोध—संस्थान की स्थापना के साथ ही विश्वविद्यालयों के हिन्दी विभागों में भी शोध—अनुसंधान कार्य आरंभ हुआ। केरल में एमके दामोदर अण्णी, कर्नाटक में प्रो. नागप्पा और हर्टिकर पांडे जैसे हिन्दी—प्रेमियों ने हिन्दी प्रचार—कार्य को आगे बढ़ाया। स्वामी सत्यदेव ने हिन्दी सीखने हेतु ‘हिन्दी की पहली पुस्तक’ लिखी जो दक्षिण के हिन्दी सीखने वालों के लिए बहुत उपयुक्त थी। 1922 तक हिन्दी प्रचार—प्रसार का कार्य विस्तृत हो गया।

मोहम्मद हामिद अली एक खादिम—ए—उर्दू विषयक संगोष्ठी का हुआ आयोजन

गोरखपुर। उर्दू भाषा का भविष्य उज्जवल है इस भाषा ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी पहचान बनाई है। यह बात डॉक्टर अलाउद्दीन खान ने साजिद अली मेमोरियल कमेटी के तत्वधान में आयुर्वेदिक कार्यक्रम के दौरान एम एस आई इंटर कॉलेज बक्शीपुर के सभागार में कही। मोहम्मद हामिद अली एक खादिम—ए—उर्दू विषय पर चर्चा के दौरान लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि इस दौर में उर्दू विकास के लिए ऑनलाइन संसाधनों का प्रयोग किया जा रहा है। आज के युग में टेक्नोलॉजी और साइंस के प्रगति करने से उर्दू के लिए साइबर और डिजिटल दुनिया में रास्ते खून बहुत आसान हो गए हैं। हामिद अली ने उर्दू के विकास में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कार्यक्रम को बतौर अध्यक्ष संबो. धित करते हुए वासिफ फारूकी ने कहा कि उन्हें खुशी है कि इल्मो अदब की जमीन गोरखपुर से उर्दू की तरक्की के लिए यह काम किया जा रहा है। गुरुद्वारा कबीर साहब मगर की प्रशंसक बीबी परमजीत और राणा ने कहा कि उर्दू अदब की तरक्की के लिए गोरखपुर अहम भूमिका निभा रहा है। डॉक्टर सौरभ पांडे ने कहा की भाषा में जोड़ने की क्षमता मौजूद है। कमेटी के सचिव मोहम्मद शाहिद ने कहा कि उर्दू का विकास तहसील का विकास है। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए वरिष्ठ पत्रकार मुजफ्फरुल्लाह खान ने कहा कि मोहम्मद हामिद को उर्दू भाषा और साहित्य के प्रचार और प्रचार के संदर्भ में उनकी व्यापक सेवा के लिए हमेशा याद किया जाता रहेगा। कार्यक्रम में शायर वसीम फारूकी और शिवली नेशनल पीजी कॉलेज आजमगढ़ के इतिहास विभाग के अध्यक्ष डॉ अलाउद्दीन खान को सम्मानित भी किया गया। कार्यक्रम का संचालन मोहम्मद फारूख जमाल ने किया।



मोटूरी सत्यनारायण की सहायता से नेल्लूर में आंध्र प्रदेश की शाखा खुली। तमिलनाडु की शाखा तिरुचिरापल्ली में अवध नंदन के संचालन में आरंभ हुई। केरल में 1932 और कर्नाटक में 1935 में शाखाएं प्रारंभ हुईं। दक्षिण के अतिरिक्त अन्य गैर—हिन्दीभाषी राज्यों में हिन्दी के प्रयोग बड़े। महात्मा गांधी गुजराती थे, लेकिन भारत लौटकर उन्होंने हिन्दी में ही अपनी बात रखना शुरू किया। 1918 के इंदौर के आठवें हिन्दी सम्मलेन की अध्यक्षता करते हुए उन्होंने हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने पर जोर दिया।

दक्षिण भारत में हिन्दी के प्रचार—प्रसार के उद्देश्य से उन्होंने 1918 में मद्रास में ‘दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा’ की स्थापना की। यह प्रमुख हिन्दी सेवी संस्था है जो दक्षिणी राज्यों में भारत के स्वतंत्र होने के पहले से हिन्दी के प्रचार—प्रसार में संलग्न थी। इसका मुख्य ध्येय था एक राष्ट्रभाषा हिन्दी हो— एक हृदय हो भारत जननी’।

स्वामी दयानंद सरस्वती भी गुजराती थे। संस्कृत के विद्वान थे। फिर भी आर्य समाज के विस्तार, प्रचार—प्रसार का माध्यम हिन्दी को बनाया। हिन्दी के महत्त्व को समझते हुए उन्होंने देश को एकसूत्र में बांधने का संकल्प लिया और अपने प्रमुख ग्रंथ ‘सत्यार्थ प्रकाश’ की रचना हिन्दी में की, चारों वेदों का भाष्य हिन्दी में लिखा। हिन्दी पत्रकारिता में गैर—हिन्दी भाषी बाबूराव विष्णु पराडकर की अपनी पहचान है। वे ‘कलकत्ता में हिन्दी और मराठी के शिक्षक थे।

पराडकर जी अपने मामा की पुस्तक ‘देशेर कथा’ का हिन्दी में अनुवाद करके चर्चित हो गए। उन्होंने कोलकाता से ही ‘भारतमित्र’ नामक हिन्दी पत्र निकाला। पराडकर जी ने हिन्दी पत्रकारिता को भाषाई अखबार से ऊपर उठाकर राष्ट्रीय पहचान दिलाई और हिन्दी की पत्रकारिता की भाषा का गठन किया।

भारतीय विद्या भवन के संस्थापक कन्हैयालाल

माणिकलाल मुंशी का हिन्दी प्रेम जगजाहिर है। उनके मार्गदर्शन में मुंबई से ‘नवनीत’ का प्रकाशन शुरू हुआ। साहित्य और संस्कृति के प्रचार—प्रसार में इस पत्रिका का उल्लेखनीय योगदान है। मुंशी जी ने ग्रंथों की रचना हिन्दी में करके हिन्दी के प्रति अपनी आत्मीयता प्रदर्शित की। गुजराती भाषी मुंशी जी ने हिन्दी महाभारत के पात्रों योगेश्वर श्रीकृष्ण, कुंती, युधिष्ठिर, पितामह भीष्म, द्रौपदी इत्यादि का जीवन—चरित्र लिखकर हिन्दी की महती सेवा की। इन महानुभावों के अतिरिक्त अनेक विद्वानों ने अपनी मातृभाषा के साथ ही हिन्दी की लगन से सेवा की।

विनोबा भावे ने वर्धा में हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना का विचारों पर महात्मा गांधी की इच्छा अनुसार किया। बंगाल के राजा राममोहन राय और केशव चंद्र सेन ने अपने समय में हिंदी के उत्थान में योगदान किया। चेन्नई से प्रकाशित चंदा मामा के हिंदी संस्करण के पूर्व संपादक डॉ बाला चौधरी रेड्डी आजीवन हिंदी की सेवा करते रहे। तमि. लनाडु में विरोध होने के बावजूद हिंदी पत्रिका करना केवल संपादन जारी रखा बल्कि हिंदी की शुद्धता— उत्कृष्टता से किसी प्रकार का समझौता नहीं किया। हिंदी का पहला अखबार उदंत मार्टंड भी 1826 में हिंदी क्षेत्र से बाहर कोलकाता से प्रकाशित हुआ। इसके बाद बंद भी 1829 में वहीं से निकाला गया।

गैर—हिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिन्दी विकास की संस्थाओं; फोर्ट विलियम कॉलेज, टेक्स्ट बुक सोसायटी, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा मद्रास, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा, गुजरात विद्यापीठ अहमदाबाद, हिन्दुस्तानी प्रचार सभा वर्धा, हिन्दी विद्यापीठ बंबई, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा पुणे, मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद् बेंगलुरु आदि की भी हिन्दी के विकास में उल्लेखनीय भूमिका रही है। यह रोचक है कि इनमें कार्यरत अधिकांश लेखक—साहित्यकार गैर—हिन्दी भाषी ही थे। इसके साथ ब्रह्मसमाज, आर्य समाज, सनातन और धर्म सभा, प्रार्थना सभा, थियोसॉफिकल सोसायटी, रामकृष्ण मिशन, राधास्वामी संप्रदाय आदि संस्थाओं ने भी हिन्दी के विकास को रूप एवं आकार दिया। हिन्दी समाज अपने लेखकों सूर, तुलसी, कबीर, मीरा को जितना सम्मान देता है, उतनी ही श्रद्धा और सम्मान गैर—हिन्दी भाषी क्षेत्रों के हिन्दी रचनाकारों रहीम, रसखान, नामदेव, ज्ञानेश्वर, गुरु नानक, नरसी मेहता, चैतन्य महाप्रभु आदि को भी देता रहा है। गैर—हिन्दी भाषियों ने हिंदी के विकास में जो मजबूत नींव तैयार की, विश्वव्यापी हिन्दी की यात्रा को आज उससे गति मिली है।

राष्ट्र निर्माण एवं हमारी सामाजिक समस्या विषयक संगोष्ठी संपन्न

गोरखपुर । महाराणा प्रताप कन्या इंटर कॉलेज एवं महाराणा प्रताप पीजी कॉलेज रामदत्तपुर गोरखपुर परिसर में प्रतिदिन युग—पुरुष महंत दिग्विजयनाथ एवं राष्ट्र संत महंत अवैद्यनाथ की पावन पुण्य की स्मृति में आयोजित शब्द देसी व्याख्यान माला के चौथे दिन प्रोफेसर हर्ष सिंह एवं पूर्व अध्यक्ष रक्षा अध्ययन विभाग दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय की उपस्थिति में राष्ट्र निर्माण एवं हमारी सामाजिक समस्या विषयक संगोष्ठी का आयोजन हुआ जिसमें विषय पर प्रकाश डालते हुए छात्र—छात्राओं को यह बतलाया गया कि राष्ट्र निर्माण के लिए आवश्यक है कि आप द्वारा जो भी जितना भी समर्थ है उसे आधार पर अपनी भूमिका निर्वाहन कीजिए। हमें जीवन के उद्देश्य एवं संदेश के बारे में सोचना चाहिए। यदि अध्यापक के तौर पर आपको कुछ सीखने का अवसर मिलता है तो इसे अपना सौभाग्य समझना चाहिए। आज के समय में घटनाओं की संख्या बढ़ती जा रही है हमारे सामने चुनौती और समस्याओं की संख्या हर तक बढ़ गई है कि उससे ऊपर पाना कठिन है

क्योंकि आज के समय में मोबाइल हमारे परिवार का एक अंग बन चुका है। जो हर घड़ी नई—नई समस्या एवं सूचनाओं प्रस्तुत करता है हम उन समस्याओं का हिस्सा बनते जा रहे हैं। इसके लिए यह आवश्यक है कि हम अपनी रफ्तार धीमी करके थोड़ा चिंतन और मनन करें । हम पृथ्वी पर क्यों आए हैं उसके बारे में हमें कुछ पता नहीं है। आज के युग में इस मशीनी युग ने बहुत सारी

समस्याओं को हमारे समक्ष प्रस्तुत कर दिया है। हम पर्व और त्योहार क्यों मनाते हैं क्या कभी हमने सोचा है व्रत और त्योहार औपचारिक मात्र रह गए हैं किंतु यदि थोड़ा ठहर कर हम विचार करें तो हमें इसका जवाब मिल जाएगा। हर कहानी का संद. 'श' यह है दिवाली का संदेश दिया जलाना नहीं वरन् मन के अंधेरे में प्रकाश लाना है। हम अपने अंदर अंधकार को छुपाते हैं। इसके बजाय हमें ज्ञान का दीपक जलाना चाहिए। मैं किसी रावण को करने का पुतला जलाने की वजह अंदर के रावण को मारना चाहिए। हम महान विभूतियों को क्यों याद करते हैं



हरितालिका तीज की तैयारी में जुटी महिलाएं

निधन पर शोक

गोरखपुर। मझवार उत्थान सेवा समिति का मासिक बैठक 13 सितम्बर को मुहल्ला तुर्कमानपुर में दिपचन्द्र मझवार के निवासी स्थान पर मण्डल अध्यक्ष उमाशंकर मझवार के अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। मझवार उत्थान सेवा समिति के सदस्य सूरज मझवार उर्फ मिट्ठू मझवार पुत्र स्व. रामकिशुन उम्र करीब 40 वर्ष का मृत्यु 13 को अपने निवास स्थान भैसा खाना तुर्कमानपुर में हुई। उनके पुत्र मनिष कुमार मझवार ने राप्ती नदी के तट पर राजघाट पर दाहसंस्कार किया। इनके निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया गया, दो मिनट मौन रह कर ईश्वर से प्रार्थना किया गया कि भगवान उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

शोक सभा में डॉ रामकेवल मझवार, दिपू मझवार, श्रवण कुमार मझवार, प्रवीण कुमार मझवार, अमरनाथ मझवार, ज्ञानमझवार, रामाकान्त मझवार, बलई मझवार, भानू मझवार, अजय कुमार मझवार, सोनू मझवार, संतोष मझवार, पीयुष मझवार, दयानन्द मझवार, प्रमोद कुमार मझवार, रामनन्द मझवार, रामवृक्ष मझवार, सुबाष चन्द्र मझवार, अंजनी कुमार मझवार, सतीश मझवार, गिरधर मझवार, सुरेश मझवार, प्यारे लाल मझवार, पिन्टू मझवार, साधू मझवार, आदि लोग उपस्थित रहे।

राष्ट्र निर्माण के लिए जब हम कुछ नया करते हैं

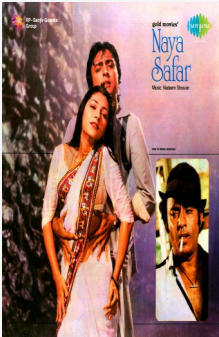
तो उसके पीछे एक श्रृंखला एक करवा बन जाता है पुन: उन्होंने दशरथ मांडवी के कृत संकल्प को याद दिलाते हुए बताया कि किस प्रकार अकेले ही शोक युक्त जीवन से संदेश लेकर समाज में सेवा का बहुत बड़ा कार्य कर पहाड़ को काटकर रास्ता बना दिया। अगर हमारे पास संसाधनों की कमी है तभी हमें दुनिया में आगे बढ़ने से कोई रोक नहीं सकता। यदि हम कृत संकल्पित है तो निश्चित रूप से हम किसी भी कार्य में सफल हो सकते हैं ।कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती एवं महंत द्वय की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित करने के पश्चात दीप प्रज्वलन कर किया गया। मुख्य अतिथि का स्वागत महाविद्यालय की प्राचार्य सीमा श्रीवास्तव द्वारा स्मृति ग्रंथ भेंट कर किया गया । मंच संचालन डॉक्टर मंगलिका त्रिपाठी एवं आभार ज्ञापन डॉक्टर प्रिया तिवारी ने किया।

“ हॉरर फिल्मों के अमिताभ बच्चन: जावेद खान”



कबीर बेदी दीपक पाराशर और सुरेश ओबेरॉय यह सभी फिल्म जगत में आने से पहले ही दर्शकों के बीच में प्रसिद्ध थे। सवालिया उठना है कि बिना कोई फिल्म किये इतनी प्रसिद्धि कैसे मिली होगी? दरअसल उसे जमाने में सिर्फ बड़े लोगों के पास ही टीवी होती थी बड़ी—बड़ी कंपनी पोस्टर

के द्वारा विज्ञापन करती थी। बस इसी बात के लिए यह कलाकार खासी चर्चित हो चुके थे। उनकी खूबसूरती कद और डैशिंग पर्सनललिटी से लोग कितने प्रभावित हो चुके थे कि छोटे—छोटे गांव में लोग उनकी तरह हेयर स्टाइल और मुझे रखने लगे । एस कुमार और मुंबई बैंक पोस्टर्स में सुरेश ओबेरॉय और दीपक का राशि अंदाज में खड़े रहते थे ठीक उसी तरह का एक व्यक्ति ने फॉलो करने लगा। फिल्म में आने से पहले जावेद खान ओनली विमल के विज्ञापन से खासे लोकप्रिय हो चुके थे।



2000 का जमाना लगने के बाद जावेद खान की बड़ी तेजी से साख गिर गई जिसका परिणाम यह निकला कि आज की पीढ़ी इस चेहरे को पहचानती नहीं है जावेद खान भोपाल शहर के रहने वाले हैं इसलिए भोपाल का रहवासी उन्हें जानता और पहचानता है। जावेद याकूब खान का जन्म भोपाल में ही 24 मार्च 1962 को वकील के घर में हुआ था उनके पिता मो. हम्मद याकूब खान क्रिमिनल लॉयर के रूप में काफी मशहूर थे। तो वही उनकी माताजी किसी रईस परिवार से ताल्लुक रखती थी। उच्च रहन—सहन के साथ जावेद खान का बचपन गुजरा परन्तु एक्टर बनने का कोई शौक नहीं था। पढ़ाई लिखाई में वह इतनी तेज थे कि वह पूरे स्कूल में अव्वल रहा करते थे। आगे चलकर कॉलेज के दिनों में उन्होंने अकादमिक स्तर पर इकोनॉमिक्स और गणित विषय के साथ स्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण की। आगे की पढ़ाई जारी रखने के लिए उन्होंने मुंबई के सीबीएसई कॉलेज में दाखिला लिया। वहां लोगों के कहने पर उन्होंने मॉडलिंग के क्षेत्र में अपनी किस्मत को आजमाया। उनकी पर्सनैलिटी और लुक्स लाजवाब होने के कारण रिलायंस कंपनी के ओनली विमल ने उन्हें अप्रोच किया और ढेर सारे पोस्टरर्स पर उनकी फोटो लगवा दी। सबसे पहले उस दौर के जानेमाने फिल्मकार श्याम बेनेगल ने विज्ञापन की दुनिया से रुबरु करवाया। दरअसल ओनली विमल से पहले जावेद खान ने कोलगेट टूथपेस्ट के लिए काम किया। जिसके निर्देशक खुद श्याम बेनेगल थे। जब

जावेद खान को पता चला कि उनकी पर्सनैलिटी किसी फिल्म स्टार से कम नहीं है तो उन्होंने तुरंत एफटीआईआई में अभिनय का कोर्स ज्वाइन कर लिया। नेस्कैफे काफी, गोल्ड स्पॉट बॉम्बे डाइंग और विमल में काम करने के बाद उन्होंने विज्ञापन के क्षेत्र में रूप किया 80 के दशक में मुंबई के ओबेरॉय टिटेन्ट नामक होटल का उद्घाटन के अवसर पर ताज होटल को चुनौती देने वाले इस होटल की सेरेमनी के लिए खुद जावेद खान में पहली बार फैशन शो में हिस्सा लिया। इसके बाद फैशन डिजाइनर्स ने अप्रोच कर उनकी सफलता में चार चांद लगा दिया। उसे दौर में एस कुमार के कपड़े खास से प्रचलित हुआ करते थे। इस ब्रांड का भी खूब प्रचार किया। एफटीआईआई में एक्टिंग की पढ़ाई करते समय फैशन की तरफ उनका रुझान कम हुआ और उन्होंने एक्टिंग पर ज्यादा से ज्यादा फोकस किया।

1974 से लेकर 1976 तक वह एफटीआईआई में पढ़ रहे थे। जावेद खान चंद कलाकारों में से एक हैं जिन्हें एक्टिंग के दौरान चंद फिल्मों में काम करने का अवसर भी प्राप्त हुआ। 1981 में किन्ही कारणों से भोपाल वापस लौटना पड़ा। जिस स्कूल में उन्होंने पढ़ाई की उसे स्कूल में उन्हें स्वयंसेवक के रूप में अपनी सेवाएं भी देनी पड़ी। 1981 के ही दौरान जावेद खान वापस मुंबई आ गए।

जानकार सूत्र बताते हैं कि अपराधी कौन जावेद खान की पहली फिल्म है लेकिन एक नाम के दो

कलाकार होने के कारण यहां एक गड़बड़ी हो गई। अपराधी कौन में जावेद खान अमरोही थे ना कि जावेद खान। जावेद खान की पहली फिल्म नया सफर थी जो 1982 में रिलीज हुई थी उनकी हीरोइन आरती गुप्ता थी। नदीम श्रवण ने अपने बेमिसाल संगीत से इस फिल्म को हिट कर दिया। इसी वर्ष रिलीज होने वाली जावेद खान की दो अन्य फिल्में हैं चंबल के डाकू और अजनबी इंसान। इन दोनों फिल्मों में बैंक्स ऑफिस पर अच्छा प्रदर्शन किया। इसके बाद जावेद खान ने राजेश खन्ना शबाना आजमी और शत्रुघ्न सिन्हा के साथ स्क्रीन शेयर किया फिल्म आज का एमएलए राम

अवतार में। 1984 में रिलीज होने वाली इस फिल्म ने अच्छा प्रदर्शन किया। इस फिल्म में एक गीत जावेद खान के ऊपर भी फिल्म आया गया था। बजाय इसके राजेश खन्ना इस फिल्म में लीड रोल में थे। एक अच्छी शुरुआत होने के बाद भी किसी फिल्म करने जावेद खान को अपनी फिल्मों का ऑफर नहीं दिया परंतु छोटे फिल्मकारों ने जावेद खान पर अपना खूब प्यार लुटाया। हॉरर फिल्मों के लिए जावेद खान के नाम को पास कर देते थे।

80 का समय जावेद खान के लिए इतना सौभाग्यशाली था कि लोगों ने उन्हें हर फिल्मों का अमिताभ बच्चन कहना शुरू कर दिया था। एक इंसान जिसका फिल्म जगत से कोई लेना—देना नहीं था उन्होंने इतनी सफलता अर्जित कर ली थी। यह एक कलाकार के लिए बड़े सौभाग्य की बात है।

न्यायिक व्यवस्था में बड़ी उपलब्धि

देश की न्यायिक प्रणाली में पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ाने की दिशा में सर्वोच्च न्यायालय ने गुरुवार को एक बड़ा कदम उठाया है, जो न केवल स्वागतयोग्य है अपितु इसे ऐतिहासिक भी माना जाएगा। अब सर्वोच्च न्यायालय में लम्बित मुकदमों और निस्तारित किए गए मुकदमों का रियल टाइम डाटा राष्ट्रीय न्यायिक डाटा ग्रिड (एनजेडीजी) पर देखने के लिए उपलब्ध रहेगा। सर्वोच्च न्यायालय की वेबसाइट पर ही एनजेडीजी का एक आइकान उपलब्ध होगा, जिसे क्लिक करते ही सर्वोच्च न्यायालय में लम्बित मुकदमों का वर्षवार और श्रेणीवार विवरण देखने को मिलेगा।

अभीतक उच्च न्यायालयों और जिला अदालतों में लम्बित मामलों का ही विवरण उपलब्ध था लेकिन अब नयी व्यवस्था लागू होनेसे सर्वोच्च न्यायालयके मामले भी देखे जा सकेंगे। प्रधान न्यायाधीश न्यायमूर्ति डी.वाई. चन्द्रचूड ने नई व्यवस्था की घोषणा की और कहा कि इसका उद्देश्य न्यायिक प्रणाली में पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ाना है। गुरुवार को प्रधान न्यायाधीश की पीठ जब सुनवाई के लिए बैठी तब न्यायमूर्ति चन्द्रचूड ने कहा कि एक छोटी-सी घोषणा है। यह एक ऐतिहासिक दिन है। अब सर्वोच्च न्यायालय का रियल टाइम डाटा एनजेडीजी पर उपलब्ध होगा। वस्तुतः प्रधान न्यायाधीश की यह छोटी घोषणा नहीं है, बल्कि यह बड़ी घोषणा है, जो देश की न्यायिक व्यवस्था के लिए बड़ी उपलब्धि है।

प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस व्यवस्था के लिए प्रधान न्यायाधीश चन्द्रचूड की सराहना करते हुए कहा कि प्रौद्योगिकी के इस तरह के उपयोग से पारदर्शिता बढ़ेगी और हमारे देश की न्याय वितरण प्रणालीमें वृद्धि होगी। इससे न्याय प्रदान करने की प्रणाली में तेजी आयेगी। प्रधान न्यायाधीश ने लम्बित मामलों के शीघ्र निस्तारण के प्रति भी अपनी प्रतिबद्धता दोहराते हुए ऐसे संकेत किया है कि मामलों के त्वरित निस्तारण के लिए पीठोंका गठन किया जायगा। दूसरी ओर विधि एवं न्याय मंत्रालयका कहना है कि ई-कोर्ट परियोजना का चक्र अब पूरा हो गया है। अब एक बड़ा कार्य लम्बित मुकदमों के त्वरित निस्तारण का है। इस दिशा में और सुधारात्मक बड़े कदम उठाने होंगे तभी शीघ्र न्याय के संकल्प को साकार किया जा सकेगा।



स्वामी विवेकानंद

प्रखर रूप मन भा रहा,दिव्य और अभिराम।

स्वामी जी तुम थे सदा,लिए विविध आयाम।।

स्वामी जी तुम चेतना,थे विवेक-अवतार।

अंधकार का तुम सदा,करते थे संहार।।

जीवन का तुम सार थे,दिनकर का थे रूप।

बिखराई नव रोशनी,दी मानव को धूप।।

सत्य,न्याय,सदकर्म थे,गुरुवर थे तुम ताप।

काम,क्रोध,मद,लोभ हर,धोया सब संताप।।

त्याग,प्रेम,अनुराग था,धैर्य,सरलता संग।

खिले संत तुमसे सदा,जीवन के नव रंग।।

था सामाजिक जागरण, सरोकार,अनुबंध।

कभी न टूटे आपसे,कर्मठता के बंध।।

सुर,लय थे,तुम ताल थे,बने धर्म की तान।

गुरुवर तुम तो शिष्य का,थे नित ही यशगान।।

मधुर नेह थे,प्रीति थे,अंतर के थे भाव।

गुरुवर तुमने धर्म को,सौंपा पावन ताव।।

वंदन,अभिन्दन करूँ,गुरुवर तेरा नित्य।

थे तुम खिलती चाँदनी,दमके बन आदित्य।।

प्रो(डॉ)शरद नारायण खरे



फिर से पत्रकारिता पर इमरजेंसी लगाने के मूड में कांग्रेस, तानाशाही रवैये पर ट्रोल हुआ गठबंधन..!



त्यागी, अमन चोपड़ा, अमीश देवगन, आनंद नरसिम्हा, अर्णब गोस्वामी, अशोक श्रीवास्तव, चित्रा त्रिपाठी, गौरव सावंत, नविका कुमार, प्राची पाराशर, रुबिका लियाकत, शिव अरुण, सुधीर चौधरी, दीपक चौरसिया और सुशांत सिन्हा हैं जिनसे डर कर इंडिया गठबंधन अभी से ट्रोल हो रही । सभी अलग-अलग टीवी चैनल में शो होस्ट करते हैं और जमकर राष्ट्रवाद की पैरोकारी करते हैं जो इंडिया गठबंधन के हिन्दू विरोधी नेताओं को चुभता रहा हैं । नकल और बैन सदैव वो करता है जो हीन भावना से ग्रस्त होता है। जिसे अपने आप से ही घृणा होती है वह दूसरों की नकल करके अपने आपको उच्च और बेहतर बनाने का प्रयास करता है ऐसा ही नकल फिर एक बार की गई जब इंदिरा गाँधी की तरह पत्रकारीता को नजरबंद करने का प्रयास किया जा रहा। ऐसे हीन भावना से ग्रस्त लोग गुलाम या दास मानसिकता के होते हैं। इससे कोई मतलब नहीं है कि वह भाषा कौन सी बोल रहा है, वस्त्र कैसा पहन रहा है, उसका रहन सहन कैसा है और सोचने का तरीका क्या है। अगर वह अपने मूल को छोड़कर कुछ और पकड़ रहा है तो हीन भावना से ग्रस्त गुलाम या दास ही है। आम तौर पर ऐसे लोग अपने आपको आधुनिक प्रोग्रेसिव या लिबरल इसलिए घोषित करते हैं ताकि वो अपना हीनताबोध छुपा सकें। कहीं गहरे में उन्हें इस बात का अहसास होता है कि वो हीनताबोध से ग्रस्त हैं। इसलिए सबसे मुखर रूप से वो अपने आपको आधुनिक या प्रोग्रेसिव बताते हैं ताकि अपनी नकल वाली मानसिक गुलामी को

छुपा सकें ऐसा ही आचरण इन नेताओं का हैं जो मोदी से डरे हुए हैं ।अखिल भारतीय कांग्रेस पार्टी ने सोशल मीडिया पर स्टेटमेंट जारी करके कहा— हर रोज शाम 5 बजे कुछ टीवी चैनल्स पर नफरत का एक बाजार सजाया जाता है। ऐसे में इंडिया गठबंधन ने तय किया है कि 'हम नफरत के बाजार में ग्राहक बनकर नहीं जाएंगे' हमारा उद्देश्य है 'नफरत मुक्त भारत' जुड़ेगा भारत, जीतेगा इंडिया पर ये नहीं कहा की डीएमके जहर उगलेगा, टीएमसी हिन्दुओं का कत्ले आम कराएगा। इंडिया गठबंधन की तीसरी बैठक में बनाई गई 5 कमेटियां उल्लेखनीय है कि मुंबई में 31 अगस्त और 1 सितंबर को विपक्षी गठबंधन की तीसरी बैठक हुई थी। इसमें कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड्गे और बिहार के मुख्य मंत्री नीतीश कुमार समेत 28 विपक्षी दलों के नेता शामिल हुए। बैठक में कोऑर्डिनेशन और कैंपेन समेत 5 कमेटियां बनाई गईं। 5 सितंबर को हुई कैंपेन कमेटी की बैठक 5 सितंबर को कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड्गे के नेतृत्व में दिल्ली में इंडिया के कैंपेन कमेटी की पहली बैठक हुई थी। इसमें मध्य प्रदेश समेत 5 राज्यों में होने वाले विधानसभा चुनाव और 2024 लोकसभा चुनाव से पहले कैंपेन की तैयारी पर चर्चा हुई। साथ ही 18 से 22 सितंबर तक चलने वाले संसद के विशेष सत्र में सरकार को घेरने की रणनीति बनाई गई। की चौथी बैठक दिल्ली या भोपाल में,विप क्षी गठबंधन इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इनक्लूसिव अलायंस की चौथी बैठक दिल्ली में होगी। हालांकि इस बैठक के भोपाल में भी होने का विचार किया जाएगा क्योंकि भोपाल में अक्टूबर के पहले हफ्ते में ही इस गठबंधन की रैली की जाएगी क्योंकि मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव भी होने वाला है।

पंकज कुमार मिश्रा
जौनपुर यूपी



आज भारत दुनिया का नेतृत्व करने की स्थिति में

शंकाओं और आशकांओं के मध्य जी-20 शिखर सम्मलेन सफलता के साथ संपन्न हो गया। जी-20 में नई दिल्ली डिक्लेरेशन का स्वीकार होना, यह कूटनीतिक मोर्चेपर भारतकी बड़ी जीत है। जी-20 में सभी महाशक्तियां शामिल हैं। उनकी मौजूदगी में भारत द्वारा सहमति का रास्ता निकालना भारत की बड़ी कामयाबी है। अफ्रीकन यूनियन को जी-20 में शामिल कराना भी भारतकी बड़ी सफलता है। अमेरिका, फ्रांस, ब्रिटेन और जापान ने भी एयू को स्थायी सदस्य बनाने के मामले में बाधा खड़ी नहीं की। भारत की छवि खराब करने का प्रयास कर रहे आतंकवादी दिल्ली की सुदृढ़ सुरक्षा देख कुछ नहीं कर पाए। मुंबई और दिल्ली की संसद में घुस कर हमला करने वाले आतंकी अब ऐसी घटना करने की सोच भी नहीं पा रहे। जी-20 शिखर सम्मलेन के पहले दिन जब नई दिल्ली डिक्लेरेशन के स्वीकार होने की घोषणा हुई तो सम्मलेन को कवर करने आये सारे पत्रकार आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। किसी को यह उम्मीद नहीं थी कि घोषणा पत्र सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया जायगा। जी-20 घोषणा पत्रकी सबसे बड़ी उपलब्धि यह थी कि इसके सभी 83 पैराग्राफ चीन और रूस के साथ सौ प्रतिशत सर्वसम्मति से पारित किये गये थे। यह पहली बार था कि घोषणा में कोई नोट या अध्यक्ष का सारांश शामिल नहीं था। परराष्ट्रमंत्री डा. एस. जयशंकर ने पत्रकारों का बताया कि गत वर्ष इंडोनेशिया में हुए सम्मेलन में अफ्रीकन यूनियन ने पीएम मोदी से आग्रह किया था कि उसे भी समूह का सदस्य बनाया जाय। इस पर पीएम मोदी ने उन्हें गारंटी दी थी कि वे अफ्रीकन यूनियन को जी-20 का सदस्य बनवायेंगे। अब पीएम मोदी ने वह गारंटी पूरी कर दी है।

जानकारोंका कहना है, एयूको जी-20 की स्थायी सदस्यता दिलाना आसान नहीं था। इस बाबत रूस और चीन का रुख कुछ अलग था। चीन को जी-20 का विस्तार पसन्द नहीं था। वजह, इससे ग्लोबल साउथ में उसका कद प्रभावित होता है। करीब एक दशक से चीन का फोकस ऐसे देशों पर रहा जो अमेरिका, ब्रिटेन या भारत के ज्यादा करीब नहीं हैं। ऐसे देशों को चीन उन समूहों का सदस्य बनवाने की कोशिश कर रहा है, जो उसके प्रभावमें हैं। भारत ने यहीं पर कूटनीतिक दांव चला और एयू (अफ्रीकन यूनियन) को जी-20 का सदस्य बनवा दिया। चीनका प्रयास था कि वह अफ्रीकी संघ के देशों में भारी निवेश के माध्यम से अपने आर्थिक लक्ष्यों की पूर्ति करे। अब इन देशोंके जी-20 का सदस्य बननेपर अब चीन उन देशों का शोषण करने की साजिश में सफल नहीं हो सकेगा। एयू के 55 देशों के प्राकृतिक संसाधन, चीन के प्रभाव में आने से बच जायेंगे।आंशका थी कि रूस-यूक्रेन युद्ध के मुद्दे पर सर्व सम्मत निर्णय नहीं हो सकेगा। अमेरिका और यूरोपियन देश चाहेंगे कि यूक्रेन हमले के लिए रूस को जिम्मेदार



माना जाय। इसके लिए उसकी निन्दा की जाय। रूस और चीनका रुख इसके विपरीत होगा। भारत भी नहीं चाहता कि उसकी भूमि से उसके परम्परागत मित्र के विरुद्ध कोई निन्दा या उन्त्य कोई प्रस्ताव पारित न हो। भारतने घोषणा-पत्रपर सर्व समर्थन बनाने के लिए पहल से ही काम शुरु कर दिया था। उसके राजनयिक इस पर सहमति बनाने में लगे थे। साझा घोषणा-पत्रपर सभी देशों की सहमति इसलिए खास है, क्योंकि नवंबर 2022 में इंडोनेशिया समिट में जारी घोषणा-पत्रमें रूस-यूक्रेन युद्ध को लेकर सदस्य देशों के बीच सहमति नहीं बन पाई थी। तब रूस और चीनने अपने आपको युद्धके बारेमें की गयी टिप्पणियोंसे अलग कर लिया था। तब घोषणा-पत्रके साथ ही इन देशोंकी लिखत असहमति शामिल की गई थी। नई दिल्ली डिक्लेरेशन के 13वें पैराग्राफ में लिखा है, हम सभी राज्यों से क्षेत्रीय अखंडता और संप्रभुताको, अंतरराष्ट्रीय कानूनों के मुताबिक बनाये रखने की अपील करते हैं। मानवीय कानून, शांति और स्थिरताकी रक्षा करनेवाली बहुपक्षीय प्रणाली सहित अंतरराष्ट्रीय कानूनके सिद्धांतों को बनाए रखने का आह्वान करते हैं। विभिन्न देशों के मध्य संघर्षों का शांतिपूर्ण समाधान और संकटों के हलके हलके लिए प्रयास करने के साथ ही कूटनीति और संवाद महत्वपूर्ण हैं। हम वैश्विक अर्थव्यवस्थापर युद्ध के प्रतिकूल प्रभाव को संबोधित करने के अपने प्रयास में एकजुट होंगे। यूक्रेन में व्यापक एवं न्यायसंगत और टिकाऊ शांतिका समर्थन करने वाली सभी प्रासंगिक और रचनात्मक पहलों का स्वागत करेंगे। बशर्ते, ये सभी पहल, संयुक्त राष्ट्र चार्टर के सभी उद्देश्यों और सिद्धांतों को कायम रखें। एक पृथ्वी, एक परिवार और एक भविष्य की भावना से राष्ट्रों के बीच शांतिपूर्ण, मैत्रीपूर्ण और अच्छे पड़ोसी संबंधों को बढ़ावा देना होगा। भारतने ऐसा कर रूस और यूक्रेन के लिए एक

संदेश और जी-20 का स्टैंड स्पष्ट कर दिया। भारत की जी-20 अध्यक्षता की विश्व बैंक के अध्यक्ष अजय बंगा ने जमकर तारीफ की है। बांगा ने कहा कि भारतने जी-20 की अध्यक्षता में दुनिया के लिए एक नया आयाम तय किया है। बंगाने कहा कि हर देश अपना फायदा देखता है, लेकिन मैंने इस सम्मेलनमें जो मूड दे खा, उससे मैं आशावादी हूं। विश्व बैंक अध्यक्ष ने कहा कि यहां हर देश अपने राष्ट्रीय हितों का ध्यान तो दे रहा था, लेकिन दूसरेके विचारोंको भी सुन रहा था। जी-20 शिखर सम्मेलन में बारे में ऑस्ट्रेलियाई प्रधान मंत्री एंथनी अल्बनीज ने जी-20 की बैठक को सफल करार दिया है। दोनों राष्ट्रों के बीच व्यापक आर्थिक सहयोग समझौते (सीईसीए) को लेकर सार्थक नीति बनी है। भारत मध्य पूर्व-यूरोप शिपिंग और रेलवे कनेक्टिविटी कॉरिडोर की घोषणा को एक बड़ी बात करार देते हुए अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन ने कहा, अगले दशक में भागीदार देश निम्न-मध्यम आयवाले देशों में बुनियादी ढांचे की कमी को दूर करेंगे। बाइडेन ने कहा, मैं प्रधान मंत्री मोदीको धन्यवाद देना चाहता हूं। एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य, यही इस जी-20 शिखर सम्मेलन का फोकस है। पार्टनरशिप फॉर ग्लोबल इन्फ्रास्ट्रक्चर एंड इन्वेस्टमेंट (पीजीआईआई) और भारत मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा, भारत संयुक्त अरब अमीरात, सऊदी अरब, यूरोपीय संघ, फ्रांस, इटली, जर्मनी एवं संयुक्त राज्य अमेरिकासे जुड़े कनेक्टिविटी एवं बुनियादी ढांचे के विकास में सहयोगपर एक ऐतिहासिक पहल है। सउदी अरब के क्राउन प्रिंस सलमान ने इकानॉमिक कॉरिडोर की पहल के लिए इसके लिए काम करने वालों को धन्यवाद दिया। य

ूरोपियन कमीशन की अध्यक्ष, प्रेसीडेंट उर्सुला वॉन डेर लेन ने कहा, अर्थव्यवस्थाओं के इन्फ्रास्ट्रक्चर में इनवेस्टमेंट मिडिल इनकम वाले देशों की आवश्यकता है। इंडिया-मिडिल ईस्ट-यूरोप इकॉनॉमिक

कॉरिडोर, ऐतिहासिक है। यह इंडिया, अरेबियन गल्फ और यूरोपके बीच सीधा सम्पर्क बनानेवाला है। इसके चलते भारत और यूरोपके बीच व्यापार में 40 प्रतिशत की तेजी आयगी। यह महाद्वीपों और सभ्यताओं के बीच ग्रीन एंड डिजिटल ब्रिज होगा। ट्रांस अफ्रीकन कॉरिडोर, यह घोषणा भी बड़े स्तरपर इन्फ्रास्ट्रक्चर में निवेश की पहल है। इसका लाभ सभी सदस्यों को होगा। फ्रांसके राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रॉने कहा, ये एक बहुत महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट है। सभी सदस्य देश, लंबी अवधि के लिए निवेश करने के प्रतिबद्ध हैं। जर्मनी के चांसलर ओलाफ शोल्जने भी इसे एक महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट करार दिया है। इसमें जर्मनी 3500 मिलियन यूरो का वर्ल्ड बैंक के साथ अतिरिक्त निवेश करेगा।

पीएम मोदी ने समुद्र में केबल के डिजाइन, निर्माण, बिछाने और रखरखाव में क्वाडकी सामूहिक विशेषज्ञता का लाभ उठाने के लिए केबल संचार-संपर्क और सहनीयता के लिए साझेदारीपर बल दिया था। राजनेताओं ने भारत-प्रशांत क्षेत्र में विकास के बारे में महत्वपूर्ण बातचीत की। एक मुक्त, खुले और समावेशी भारत-प्रशांत क्षेत्र के प्रति अपने दृष्टिकोण के तहत, इन नेताओं ने संप्रभुता, क्षेत्रीय अखंडता और विवादों के शांतिपूर्ण समाधान के सिद्धांतों को बनाए रखने के महत्व को दोहराया।

वित्तमंत्री निर्मला सीतारमणने कहा, हमें चुनौतीपूर्ण समय में अध्यक्षता मिली। जी-20 का साझा घोषणा-पत्र 37 पेज का है। इसमें 83 पैराग्राफ हैं। यहां मुख्य प्रस्तावों यह हैं-सभी देश सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल पर काम करेंगे। भारत की पहलपर बन पयूचर अलायंस बनाया जाएगा।

प्रस्ताव में कहा गया है कि सभी देशों को युएन चार्टर के नियमों के मुताबिक काम करना चाहिए। बायोफ्यूल अलायंस बनाया जायगा। इसके फाउंडिंग मेंबर भारत, अमेरिका और ब्राजील होंगे। एक धरती, एक परिवार, एक भविष्यपर जोर दिया जायगा। मल्टीलेट्रल डेवलपमेंट बैंकिंग को मजबूती दी जाएगी। ग्लोबल साउथ की प्राथमिकताओं पर फोकस किया जायगा। क्रिप्टोकರೆसी पर ग्लोबल पालिसी बनाई जाएगी। कर्ज को लेकर बेहतर व्यवस्था बनाने पर भारत ने कॉमन फ्रेमवर्क बनवाने की बात पर जोर दिया है। ग्रीन और लो कार्बन एनर्जी टेक्नोलॉजी पर काम किया जाएगा। सभी

देशों ने आतंकवाद के हर रूप की आलोचना की है। चांद के दक्षिण ध्रुवपर कामयाब लैंडिंग और भारत का अंतरिक्ष यान के कामयाबीके साथ प्रेक्षण के बाद जी-20 शिखर सम्मेलन की सफलता भारतकी बड़ी कामयाबी है। कभी सांप और सर्पों का देश कहलाने वाला भारत आज दुनिया के चंद प्रमुख देशों की लाइन में आकर खड़ा हो गया है। आज भारत दुनिया का नेतृत्व करनेकी स्थिति में है।

नया आर्थिक गलियारा दुनिया का भला भी करेगा

जी–20 शिखर सम्मेलन के पहले दिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारत, मध्य पूर्व और यूरोप के एक मेगा इकोनॉमिक कॉरिडोर की ढ णषणा की। इसके बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बता दिया कि कूटनीति और कारोबार की दुनिया में आने वाला समय भारत का है और चीन के लिए आगे की राह अब आसान नहीं होने वाली है। पीएम मोदी ने कहा कि आने वाले समय में भारत, पश्चिम एशिया और यूरोप के बीच आर्थिक एकीकरण का प्रभावी माध्यम होगा। यह पूरे विश्व में कनेक्टिविटी और विकास को सस्टेनेबल दिशा प्रदान करेगा। मुंबई से शुरू होने वाला यह नया कॉरिडोर चीन के बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव यानी बीआरआई का विकल्प होगा। यह कॉरिडोर 6 हजार किमी लंबा होगा। इसमें 3500 किमी समुद्र मार्ग शामिल है। कॉरिडोर के बनने के बाद भारत से यूरोप तक सामान पहुंचाने में करीब 40 प्रतिशत समय की बचत होगी।

इस कॉरिडोर का नाम इंडिया–मिडल ईस्ट–यूरोप इकोनॉमिक कॉरिडोर है। इस प्रोजेक्ट में भारत, यू.ए.ई, सऊदी अरब, यूरोपीय यूनियन, फ्रांस, इटली, जर्मनी और अमेरिका शामिल होंगे। इस गलियारे की स्थापना सबसे अहम इसलिए भी है क्योंकि इसके निर्माण के साथ ही दुनिया के व्यापार का भूगोल बदल जाएगा। प्रस्तावित गलियारा भारत से संयुक्त अरब अमीरात तक अरब सागर में फैला होगा, फिर यूरोप से जुड़ने से पहले सऊदी अरब, जॉर्डन और इजराइल पार करेगा।

इस परियोजना के तहत समुद्र के नीचे केबल और ऊर्जा परिवहन बुनियादी ढांचा भी शामिल होगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इसे ऐतिहासिक सांझेदारी बताते हुए कहा कि आने वाले समय में भारत पश्चिम एशिया और यूरोप के बीच आर्थिक सहयोग का एक बड़ा माध्यम होगा। इस कोरिडोर से दुनिया की कनेक्टिविटी को एक नई दिशा मिलेगी। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन ने कहा है कि गलियारे में शामिल देशों के लिए यह परियोजना अनंत अवसर प्रदान करेगी। इससे व्यापार करना तथा स्वच्छ ऊर्जा निर्यात करना आसान बन जाएगा। यह किसी ऐतिहासिक क्षण से कम नहीं है।

भारत–मिडल ईस्ट–यूरोप शिपिंग और रेलवे कनेक्टिविटी कोरिडोर की योजना को एक बड़ी बात करार देते हुए अमरीकी राष्ट्रपति बाइडेन ने कहा कि अगले दशक में भागीदार देश निम्न–मध्यम आय वाले देशों में बुनियादी ढांचे की कमी को दूर करेंगे। इस योजना में शामिल सभी 9 देशों के प्रमुखों तथा प्रधानमंत्री मोदी को धन्यवाद कहते हुए बाइडेन ने कहा कि एक पृथ्वी, एक परिवार और एक भविष्य यही इस जी–20 शिखर सम्मेलन का फोकस है। क्षेत्र में चीन के आर्थिक दबदबे को चुनौती देते हुए अमरीका और यूरोपीय संघ ने भारत को मध्य पूर्व और भू–मध्य सागर से जोड़ने वाले एक नए जहाज और रेल गलियारे के विकास का समर्थन किया है। निश्चित तौर पर इस प्रोजेक्ट को महाद्वीपों और सभ्यताओं के बीच एक ग्रीन और डिजिटल पुल माना जा रहा है। ऐसे में अहम प्रश्न यह है कि इस गलियारे से भारत को क्या लाभ होगा। जानकारों के अनुसार भारत को पहला लाभ यह होगा कि मिडल ईस्ट और यूरोप के बाजारों में भारत की पहुंच और पकड़ मजबूत हो सकती है। दूसरा लाभ होगा कि शिप और रेल कनेक्टिविटी होने से कम से कम लागत में तेल और गैस की सप्लाई होगी। तीसरा लाभ यह होगा कि मिडल ईस्ट और यूरोप में चीन पर भारत को कूटनीतिक और कारोबारी बढ़त मिलेगी। अब सवाल ये है कि अमेरिका इस प्रोजेक्ट में बढ़–चढ़कर क्यों हिस्सा ले रहा है। इसकी वजह चीन का बेल्ट एंड रोड प्रोजेक्ट है, जिसके जरिए ड्रैगन मिडल ईस्ट से यूरोप के बाजारों पर कब्जा जमाना चाहता है। अमेरिका की कोशिश चीन के प्रभाव को रोकने की है, इसलिए उसने भारत की मदद ली और सऊदी अरब–यूई को नए कॉरिडोर के लिए तैयार किया। इसकी घोषणा से पहले अमेरिकी अधिकारी फाइनर ने कहा था कि अमेरिका की नजर में ये समझौता पूरे क्षेत्र में तनाव कम करेगा और हमें ऐसा लगता है कि इससे

टकराव से निपटने में मदद मिलेगी।

इस कॉरिडोर की अगुवाई भारत और अमेरिका साथ मिलकर करेंगे। इस समझौते के तहत कनेक्टिविटी और इंफ्रास्ट्रक्चर पर बड़े पैमाने पर काम होगा। यह ट्रेड रूट भारत को यूरोप से जोड़ते हुए पश्चिम एशिया से होकर गुजरेगा। भारत और अमेरिका के अलावा पश्चिम एशिया से संयुक्त अरब अमीरात व सऊदी अरब और यूरोप से यूरोपीय संघ, फ्रांस, इटली व जर्मनी भी इसका हिस्सा होंगे।

यूरोपीय आयोग की अध्यक्ष उर्सुला वॉन डेर लेन ने परियोजना के शुभारंभ पर कहा, “यह महाद्वीपों और सभ्यताओं के बीच एक हरित और डिजिटल सेतु है।” रेल से भारत और यूरोप के बीच व्यापार 40 प्रतिशत तेज हो जाएगा। भारत मिडल ईस्ट–यूरोप आर्थिक गलियारे का उद्देश्य मध्य पूर्व के देशों को रेलवे से जोड़ना और उन्हें बंदरगाह के माध्यम से भारत से जोड़ना है जिससे शिपिंग समय, लागत और ईंधन के इस्तेमाल में कटौती करके खाड़ी से यूरोप तक ऊर्जा और ट्रेड में मदद मिलेगी। इस प्रोजैक्ट में 2 अलग–अलग कोरिडोर शामिल होंगे। जहां एक ओर पूर्वी कोरिडोर भारत को खाड़ी देशों से जोड़ेगा वहीं उत्तरी कोरिडोर खाड़ी क्षेत्र को यूरोप से जोड़ेगा। चीन के बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव यानी बी. आर.आई. प्रोजेक्ट की तर्ज पर ही इसे एक महत्वाकांक्षी योजना माना जा रहा है। महत्वाकांक्षी आर्थिक गलियारे की घोषणा को इस्त्राइल के लिए ‘बड़ी खबर’ बताते हुए प्रध. नानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहु ने कहा है कि ‘हमारे इतिहास की सबसे बड़ी सहयोग परियोजना’ पश्चिम एशिया का चेहरा बदल देगी। यह इजराइल और पूरी दुनिया को लाभान्वित करेगा।

जहां तक भारत का सवाल है तो ये क्षेत्रीय सीमाओं को नहीं मापता। सभी क्षेत्रों के साथ–साथ कनेक्टिविटी भारत की मुख्य प्राथमिकता है। कनेक्टिविटी विभिन्न देशों के बीच आपसी व्यापार नहीं बल्कि आपसी विश्वास भी बढ़ाने का स्रोत है। आज जब हम कनेक्टिविटी की इतनी बड़ी पहल कर रहे हैं तब हम आने वाली पीढ़ियों के सपनों के विस्तार के बीज बो रहे हैं। यह घटनाक्रम एक महत्वपूर्ण समय पर हुआ है क्योंकि जी–20 साझेदारी में शामिल विकासशील देशों के लिए वाशिंगटन को एक वैकल्पिक साझेदार और निवेशक के रूप में पेश किया जा रहा है। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन वैश्विक बुनियादी ढांचे को लेकर चीन की बेल्ट एंड रोड पहल का मुकाबला करना चाहते हैं।

अमेरिका की नजर में यह समझौता पूरे क्षेत्र में व्याप्त तनाव के तापमान को कम करेगा और टकराव से निपटने में मदद मिलेगी। भारत–मध्य पूर्व यूरोप आर्थिक गलियारा पश्चिम में भारत की जमीनी कनेक्टिविटी को आसान बनाएगा और पाकिस्तान की रोक को बेअसर करेगा। साल 1990 में ही पाकिस्तान ने भारत की जमीनी कनेक्टिविटी के जरिए अफगानिस्तान और मध्य एशिया तक पहुंच देने से मना कर दिया था। इसके अलावा यह गलियारा अरब प्रायद्वीप के साथ भारत की राजनीतिक भागीदारी को गहरा करेगा। पिछले कुछ सालों में मोदी सरकार ने संयुक्त अरब अमिरात और साउदी अरब के साथ तेजी से राजनीतिक और रणनीतिक संबंध बनाए हैं।

अमेरिकी अखबार के अनुसार इस परियोजना से अंतर–क्षेत्रीय कनेक्टिविटी को बढ़ावा मिलेगा। जिससे अरब प्रायद्वीप में राजनीतिक गहमागहमी में भी कमी आएगी और क्षेत्र में शांति और स्थिरता भी आएगी। अगर भारत–मध्य पूर्व यूरोप आर्थिक गलियारा बनता है तो द्ाक्ष पर्व एशिया से खाड़ी, पश्चिम एशिया और यूरोप तक व्यापार प्रवाह के मार्ग पर मजबूती से आगे बढ़ेगा। ये गलियारा आपूर्ति श्रृं खलाओं को भी सुरक्षित करेगा। रोजगार पैदा करेगा और व्यापार सुविधा और पहुंच में सुधार करेगा। इस गलियारे को कई लोग चीन की विवादास्पद बेल्ट एंड रोड पहल के विकल्प के रूप में देखते हैं। इसमें कोई दो राय नहीं है कि यह कॉरिडोर भारत की शक्ति और सामर्थ्य बढ़ाने में सहायक होने के साथ ही पड़ोसी चीन की चमक भी फीकी कर सकता है।

सुविधाएं थर्ड जेंडर को भी मिलना चाहिए

किन्नर सभी जगह एक समूह बनाकर रहते हैं |इनके आपसी व्यवहार की बात ही निराली होती है |द्यएक किन्नर दूसरे किन्नर के यहाँ मेहमान बतौर आता जाता रहता है द्यवे इस प्रक्रिया को मेहमाननवाजी की तरह निभाते आ रहे और आने वाले मेहमान किन्नर का स्वागत और बिदाई जी जान से करते है द्यमेहमान किन्नर को विदा करते समय इनकी आँखों में आंसू देखे गए है |वे कहते बस ये ही तो हमारा परिवार है जहां पर हम एक दूसरे के सुख दुःख में सम्मिलित होते रहते है |किन्नरों का सम्मेलन भी होता रहता है जहाँ वे अपने मुखिया किन्नर के समक्ष अपनी समस्या को रखते है |सिहस्थ में किन्नर अखाडा भी है |फिल्म “कुंवारा बाप “में गीत काफी चर्चित हुआ था “सजी रही गली मेरी” जब कही पहली संतान होती है वे वहां पहुंच कर नाच गाकर कर नेक मांगते है एवं बधाई पर बच्चे के लिए ऊपर वाले से दुआ भी मांगते है |सवाल ये है की अधिकांश आवेदन में महिला पुरुष का उल्लेख तो रहता है किन्तु किन्नर का उल्लेख नहीं मिलता है ऐसा क्यों? महिला– पुरुष इनसे दूरियां बनाकर रहते हैद्य जबकि वो भी इंसान है इनका भी अधिकार हैद्य थर्ड जेंडर को अब तक सामाजिक और पारिवारिक सहयोग पूर्ण रूप से नहीं मिल पाया है |कई जगहो पर विवाह भोज के कार्यक्रम में उन्हें भोजन के लिए आमंत्रित नही किया जाता है |ये इंसानियत मानत भेद है |उन्हें भी भोजन के लिए आमंत्रण देना चाहिये |ताकि उनका सम्मान बना रहे |जेंडर का मालूम होते ही इनके समुदाय में किन्नरों द्वारा शामिल किया जाता है |पारिवारिक और सामाजिक रिश्ते छोड़ कर इनको जाना होता है |कई किन्नर इतने सुन्दर होते है की फ़िल्मी हीरोइन भी उनके सामने कुछ भी नहीं है |कहते इनकी दुआएं काफी असरदार होती है |ये अपनी आजीविका नाच गा कर ही चलाते है |इन्हें सुविधाएं प्रदान कर इनकी समस्याओं का निदान होना चाहिए जो हक् महिला– पुरुष को प्राप्त वैसा ही हक थर्ड जेंडर को मिलना चाहिए |उनकी अपनी दुनिया है द्यभागदौड़ भरी दुनिया में उनकी समस्याों को अनदेखी न करेंद्य आखिर वे भी तो इंसान है ।

गांव छोड़कर गये लोग वापस लौट रहे

भारत का एक गांव ऐसा भी है, जिसे सूखे से निपटने के लिए 1990 में एक करोड़पतियों का गांव कहा जाता है। समिति ज्वाइंट फॉरेस्ट मैनेजमेंट कमेटी दरअसल, इस गांव की कुल आबादी बनाई गई। इसके तहत गांव में कुएं 1250 लोगों से कुछ ज्यादा है। इस गांव खोदने और पेड़ लगाने का काम श्रमदान में कुल 305 परिवार रहते हैं। इनमें से 80 लोग करोड़पति हैं, जबकि 50 परिवारों की सालाना आय 10 लाख रुपये से ज्यादा है। हम बात कर रहे हैं, महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले के हिवरे बाजार गांव की। इसे भारत का सबसे अमीर गांव भी कहा जाता है।

सबसे बड़ी बात है कि इस गांव के लोगों की आमदनी का मुख्य स्रोत खेती है। यहां के लोगों ने एकसाथ मिलकर कृषि पर जोर दिया और गांव की जीडीपी को बढ़ा लिया। हिवरे बाजार गांव में किसी समय हर तरफ गरीबी ही थी। इस वजह से लोग रोजी–रोटी की तलाश में हिवरे बाजार गांव से शहरों का रुख कर रहे थे। हालात इतने खराब थे कि 1990 में यहां 90 फीसदी परिवार गरीब थे। दरअसल, इस गांव पर 80 और 90 के दशक में भयंकर सूखे की मार पड़ी। हालात इतने बिगड़ गए कि पीने तक के लिए पानी नहीं बचा। उस समय गांव में 93 कुएं थे। भूजल स्तर भी 110 फीट नीचे तक चला गया था। कुछ लोग अपने परिवारों के साथ गांव से पलायन कर गए। फिर इस गांव के लोगों ने अपनी किस्मत खुद चमकाने का फैसला किया। वहीं, ट्यूबवेल खत्म होने के कारण भूजल स्तर 30 फीट पर आ गया है। गांव के सभी परिवारों की आय खेती से ही होती है। गांव के लोग सब्जी उगाकर हर साल मोटी कमाई करते हैं। यही नहीं, इनकी आमदनी में साल–दर–साल बढ़ोतरी भी होती जा रही है। हिवरे बाजार गांव की प्रति व्यक्ति आय देश के शीर्ष 10 फीसदी ग्रामीण क्षेत्रों की औसत आय 890 रुपये प्रति माह की दोगुनी है। बीते 20 साल में औसत आय 20 गुना से ज्यादा हो गई है। हिवरे गांव के लोगों की एकजुटता के कारण गरीबी खत्म हो गई और लोगों ने शहरों का रुख करना बंद कर दिया। अब लोग हिवरे बाजार गांव में ही रुक कर खेती करते हैं। गांव छोड़कर गए काफी लोग भी अब लौट आए हैं।



भारत में शिक्षा के सभी स्तरों पर लैंगिक समानता बढ़ी



भारत के लिए उत्साहजनक बात यह है कि इसने राजनीतिक सशक्तीकरण के मामले में पहली बार 25.3 फीसद सम.ानता हासिल की है। निश्चित ही यह स्कोर 2006 में पहली बार आई रिपोर्ट के बाद सबसे अधिक रहा है। इसी के साथ ही साथ यहां यह तथ्य भी उल्लेखनीय है कि 2006 के बाद से ही यहां महिला सांसदों की संख्या 15.1 फीसद रहकर सर्वाधिक रही है।

हाल ही में विश्व आर्थिक मंच की वार्षिक लैंगिक अंतराल रिपोर्ट–2023 प्रकाशित हुई, जिसमें भारत वैश्विक लैंगिक सूचकांक में आठ अंकों का सुधार करते हुए 146 देशों में से 127वें स्थान पर पहुंच गया है। पिछली बार से भारत की स्थिति में 1.4 फीसद अंकों का सुधार हुआ है। गौरतलब है कि विश्व आर्थिक मंच ने 2022 में अपने वैविक लैंगिक अंतराल सूचकांक में भारत को 146 में से 135वें स्थान पर रखा था। उस समय केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी ने विश्व आर्थिक मंच के वैश्विक लैंगिक अंतराल सूचकांक की मूल्यांकन प्रक्रिया पर सवाल उठाए थे। उनका कहना था कि इस वैश्विक रिपोर्ट का मूल्यांकन भारतीय मानकों को नकारकर पश्चिमी मानकों के आधार पर किया गया है। निश्चित ही इस लैंगिक अंतराल रिपोर्ट को इस बार सावधानी के साथ तैयार करते हुए भारत को कुछ बेहतर स्थिति में दर्शाया गया है।

इस सूचकांक में पाकिस्तान का 142वां, बांग्लादेश का 59वां, चीन का 107वां, नेपाल का 116वां, श्रीलंका का 115वां और भूटान का 103वां स्थान रहा है। इसी के साथ–साथ 91.2 फीसद के लैंगिक अंतर स्कोर के साथ आइसलैंड ने लगातार 14वें वर्ष में सबसे अधिक लैंगिक क्षमता वाले देश के रूप में अपनी स्थिति बरकरार रखी है। कहने की आवश्यकता नहीं कि यह ग्लोबल जेंडर गैप इंडेक्स यानी वैश्विक लैंगिक अंतराल सूचकांक पुरुषों और महिलाओं के बीच उनके सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षिक, बौद्धिक, सांस्कृतिक और आर्थिक सशक्तीकरण व उपलब्धियों तथा विकास के संदर्भ में असमानता के स्तर का आकलन करता है।

यह सूचकांक 2006 में विश्व आर्थिक मंच (वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम) द्वारा जारी बेंचमार्क इंडेक्स है जो

वैश्विक स्तर पर लैंगिक समानता को मापने के लिए विकसित किया गया है। इस रिपोर्ट का आकलन बताता है भारत में शिक्षा के सभी स्तरों पर पंजीकरण में लैंगिक समानता बढ़ी है तथा इसने 64.3 फीसद लैंगिक अंतराल को कम किया है। आर्थिक सहभागिता और अवसरों के मामले में भारत 36.7 फीसद समानता के स्तर पर पहुंचा है। महिलाओं के वेतन और आय के मामले में इसमें मामूली वृद्धि हुई है। भारत के लिए उत्साहजनक बात यह है कि इसने राजनीतिक सशक्तीकरण के मामले में पहली बार 25.3 फीसद समानता हासिल की है। निश्चित ही यह स्कोर 2006 में पहली बार आई रिपोर्ट के बाद सबसे अधिक रहा है। इसी के साथ ही साथ यहां यह तथ्य भी उल्लेखनीय है कि 2006 के बाद से ही यहां महिला सांसदों की संख्या 15.1 फीसद रहकर सर्वाधिक रही है।

तुलनात्मक आधार पर देखें तो ज्ञात होता है कि इस रिपोर्ट में लैंगिक समानता के मामले में नेपाल, श्रीलंका, बांग्लादेश और भूटान को भारत से बेहतर स्थिति में दर्शाया गया है। सही बात यह है कि रिपोर्ट के इस पक्ष पर पक्षपाती दृष्टिकोण साफ झलकता नजर आता है। दृढ़ता के साथ कहा जा सकता है कि इन देशों की सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थिति भारत से बेहतर कतई नहीं कही जा सकती है। भारत में आज सशक्त लोकतंत्र है, विश्व की पांचवीं सशक्त अर्थव्यवस्था बन गया है। चिकित्सा, शिक्षा, रक्षा, अंतरिक्ष विज्ञान, कृत्रिम बुद्धिमत्ता इत्यादि में भारत का आज कोई मुकाबला नहीं है। पिछले दिनों वैश्विकस्तर पर जो रिपोर्ट प्रकाशित हुई, उनमें से अधिकांश रिपोर्ट में या तो भारत को कमतर आंकने का प्रयास किया गया अथवा भारत की छवि को धूमिल करने का प्रयास किया गया।

इस संदर्भ में ऐसा अनुभव होता है कि विदेशी स्तर पर यह भारत के विकासशील देश से विकसित राष्ट्र बनने के संक्रमण काल की वैश्विक प्रतिस्पर्धा अधिक दिखाई पड़ती है। आज भारत अपने चहुंमुखी विकास की जो यात्रा तय कर रहा है उससे एक नए भारत का निर्माण भी हो रहा है। भारत में लैंगिक समानता यहां के सतत विकास से जुड़ने के साथ–साथ यहां मानवा. धिकारों को साकार करने के लिए महत्त्वपूर्ण है।

भारत में लैंगिक समानता का प्राथमिक उद्देश्य यहां एक ऐसे समाज का निर्माण करना है, जिसमें महिला और पुरुष जीवन के सभी चरणों में समान अवसरों और दायित्वों का निष्पक्षता के साथ निर्वहन करें। यह बात बिल्कुल सच है कि जिस राष्ट्र ने अपने यहां लैंगिक समानता का संरक्षण किया है उसने विकसित राष्ट्र के स्वप्न को भी साकार किया है। भारत अब विकसित राष्ट्र की यात्रा तय करने की ओर अग्रसर है।

मैकेन्जे ग्लोबल इंस्टीट्यूट की रिपोर्ट के अनुसार, भारत में लैंगिक समानता के प्रयास तेज करने से वै. श्विक विकास में 12 ट्रिलियन डालर की वृद्धि होने की संभावनाएं हैं। साथ ही महिलाओं की श्रम शक्ति में दस फीसद की भागीदारी बढ़ाने से 2025 तक भारत की जीडीपी में 700 अरब डॉलर की बढ़ोतरी हो सकती है। इस तथ्य के पुख्ता प्रमाण हैं कि एक समृद्ध समाज और राष्ट्र बनाने के लिए महिलाओं को समानता के आधार पर विकसित करना अपरिहार्य है। वर्तमान की वैश्विक लैंगिक अंतराल सूचकांक रिपोर्ट भी इसी ओर संकेत करती हुई भारत के इस दिशा में निरंतर प्रयास करने की सराहना करती है और भविष्य में इन प्रयासों को करते रहने की प्रेरणा देती है।

याद किए गए गामा पहलवान

गोरखपुर। खजनी के स्वर्गीय ब्रह्मदेव मिश्र एवं रामनारायण मिश्र स्मृति व्यायामशाला में आज स्वर्गीय चंद्र प्रकाश मिश्रा उर्फ गामा पहलवान की 19 वीं पुण्यतिथि मनाई गई।

इस अवसर पर पहुंचे सहजनवां क्षेत्र के विधायक शीतल पाण्डेय ने कहा कि गामा कुश्ती जगत की अमूल्य धरोहर थे।

उनकी कुश्ती कला और विचार आज भी हमारे बीच जीवित हैं। क्षेत्रीय विधायक संत प्रसाद बेल्दार ने कहा कि स्वर्गीय गामा पहलवान की इच्छा के अनुसार अखाड़े और यहां के पहलवानों का नाम अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ले जाना है।

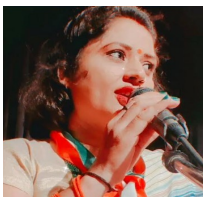
अखाड़े के गुरु गिरीवर मिश्रा ने कहा कि जीवन में चुनौतियों को स्वीकार करने वाला व्यक्ति ही सफलता प्राप्त करता है।

- गामा की कुश्ती कला और विचार जीवित—शीतल पांडेय विधायक
- अखाड़े का नाम अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ले जाना है—संत प्रसाद बेल्दार विधायक

श्रद्धांजलि सभा को घनश्याम मिश्रा, विनोद शर्मा, केशव मिश्रा, बालकिशुन पासवान,रामकिशुन यादव, राजेश पाण्डेय, लवकुश पाण्डेय, जगदीश चौरसिया, महेंद्र सिंह, जगदम्बा शुक्ला, रामकृष्ण पाठक, प्रिंस शुक्ला, अतुल त्रिपाठी,अभय शंकर शुक्ला आदि ने संबोधित किया। सभा का संचालन बृजकिशोर त्रिपाठी उर्फ गुलाब ने किया।

अध्यक्षता कर रहे ग्रामप्रधान प्रतिनिधि प्रेमशंकर मिश्रा ने सभी आगंतुकों के प्रति आभार जताया एवं गामा के परिजनों डाक्टर उदय

प्रकाश मिश्रा,गणेश शंकर मिश्रा, श्रीप्रकाश मिश्र, अनुज,हर्ष,मोहई,संजय मिश्रा,आकाश, रमाशंकर,अमर आदि ने अतिथियों का स्वागत किया। इस अवसर पर दंगल का आयोजन किया गया जिसमें पहलवान राजन महाराजगंज को नितीश खजनी ने तथा शुभम पहलवान खजनी ने संगम पहलवान कोटां को आकाश गायघाट ने आदर्श रूद्रपुर को तथा मुकुंद खजनी ने विजय पिपरां को पटखनी दी। इस दौरान 10 जोड़ी पहलवानों की कुश्ती बराबरी पर छूटी।



एकमात्र हिंदी ही हमारी भाषा हो

हिंदी ही एकमात्र ऐसी भाषा है जो हमारे पूरे भारत में बोली और समझी जाती है। चाहे हमारे बच्चे कितनी भी अंग्रेजी या किसी और भाषा को सीख ले परंतु वार्तालाप तो हिंदी में ही करते हैं। क्योंकि हमारी जड़े तो हिंदी में ही हैं, जो बात हमारी मातृभाषा में है वह बात किसी और भाषा में कहाँ? हमारे सिनेमा जगत को ही देख लीजिए हिंदी भाषा में अलग-अलग राज्यों में हजारों फिल्में बनती हैं। क्योंकि सिनेमा जगत को यह बात अच्छे से पता है कि अगर फिल्म को सुपरहिट करना है तो हिंदी एकमात्र ऐसी भाषा है जो उनकी फिल्म को आगे ले जाएगी। जिसे परिवार के सभी सदस्य सुन सकते हैं,बोल सकते हैं ,लिख सकते हैं। फिर दूसरी भाषा क्यों?

मेरा मकसद किसी दूसरी भाषा को गलत बताना नहीं है। बस अपनी भाषा के बारे में अवगत कराना है। विदेशों में हिंदी को पढ़ाने— लिखाने की कक्षाएं लगती हैं। बहुत सारे विदेशी लोग भारत में सिर्फ और सिर्फ हिंदी सीखने के लिए ही आते हैं और भारतीय संस्कृति को अपना रहे हैं। जब अमेरिका से डॉनल्ड ट्रंप भारत आए थे तो उन्होंने नमस्ते !बोल कर सबके दिलों में अलग पहचान बना ली थी।यह हमारी हिंदी भाषा का रूतबा है कि अमेरिका के लोग भी इसे सम्मान के साथ बोलते हैं।वह किसी और भाषा में कहाँ है।अखबार हो या टीवी जगत हो हर स्थान पर हिंदी छाई रहती है।हमारे देश माननीय प्रधानमंत्री जी भी हमेशा अपने भाषण हिंदी भाषा में देते हैं।उसी का नतीजा है कि उनका इतना रूतबा है। हिंदी आम बोलचाल की भाषा है ,जिसे पढ़ें लिखे लोग तो समझते हैं।आम नागरिक भी आसानी से समझ जाता है। यह ऐसी भाषा है जो सभी भाषाओं के शब्दों को आसानी से अपने अंदर समा लेती है जैसे टी वी.रेल हजारों ऐसे हैं विदेशी शब्द है जो हिंदी में आए हुए हैं। हमारी हिंदी भाषा भी माँ की तरह जो सबका मान— सम्मान कर देती है और हमेशा करती रहेगी।

मां की ममता की प्यारी है प्राचीन से भी प्राचीन है समाया जिसने प्यार सबके लिए वह हमारी हिंदी भाषा विदेशों तक जिसका डंका बाजे।

अगर हर जगह हिंदी भाषा का प्रयोग होने लगा तो इससे आम नागरिक को बहुत फायदा होगा। ग्रामीण क्षेत्रों के लोग भी आसानी से अपनी बात को हर क्षेत्र तक पहुंचा सकते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में हिंदी भाषा का ही प्रयोग होता है। उनकी पहुंच भी हर जगह हो जाएगी। इसलिए हिंदी भाषा की प्रसिद्धि दिनों— दिन बढ़ती जा रही है।भारत देश में ही नहीं अपितु विदेशों में भी हिंदी का परचम लहरा रहा है। हमारे देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी भी हर जगह पर हिंदी भाषा का ही प्रयोग करते हैं।

सीमा रंगा इन्द्रा



हिंदी का गुणगान करो

भारत की भाषा हिंदी है हिंदी का तुम मान करो क्यों पड़े हो अंग्रेजी के पीछे तुम हिंदी का गुणगान करो

जिस देश का नाम ही हिंदी हो जिसके माथे की बिंदी हो उस देश में हिंदी क्यों पीछे जरा इसका तुम ध्यान करो तुम हिंदी का गुणगान करो

जब बाहर कभी हम जाते हैं अपने को हिन्दोस्तानी बताते हैं वह अपनी मातृ भाषा बोलते हैं हम अंग्रेजी में बतियाते हैं

पैदा हम हिंदी में हुए हिंदी में ही मर जायेंगे हिंदी तो माता है अपनी नहीं इसको भूल पाएंगे

क्यों विमुख हो रहे हिंदी से हिंदी भाषा तुम अपनाओ मां है हिंदी जान है हिंदी बोलते इसको मत शरमाओ

जितना मर्जी कोई जोर लगा ले नहीं होगा इसका रूतबा कम हिंदी का रास्ता जो रोक सके नहीं किसी में इतना दम

हिंदी हिन्द की पहचान है कौन आज इससे अनजान है हिन्द की रंग रंग में बसी है हिंदी हिंदी उगते सूरज के समान है

जब कोरोना सब पर भारी था तब दूरी सब अपनाते थे पास आने से डरते थे नमस्ते से काम चलाते थे

नमस्ते ने ही पूरे विश्व को एक नया संदेश दिया भारतवासी हैं सबसे आगे दुनियां को यह बता दिया

रवींद्र कुमार शर्मा
घुमारवीं
जिला बिलासपुर हि प्र

हिंदी दिवस पर देशभर के विद्वान सम्मानित



धिकारी विजय शर्मा ने बृजलोक अकादमी के क्रियाकलापों की भूरि—भूरि प्रशंसा की, साथ ही बृजलोक ट्रस्ट के पदाधिकारियों को शुभकामनाएं भी दीं। उक्त सम्मान उन्हें संस्था अध्यक्ष — मुकेश कुमार ऋषि वर्मा, भूरीसिंह (समाजसेवी), एडवोकेट अवधेश कुमार निषाद मझवरा , एडवोकेट अरविंद आदि के कर कमलों से प्रदान किया गया। बृजलोक अकादमी साहित्य, कला, संस्कृति, समाज सेवा, पर्यावरण, शिक्षा, अध्यात्म आदि क्षेत्रों में राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीयस्तर पर सक्रिय संस्था है, जो नियमित तौर पर कार्यक्रमों का आयोजन कर राष्ट्र उन्नति के सेवा कार्यों में अनवरत क्रियाशील है।

आगरा। बृजलोक साहित्य कला संस्कृति अकादमी (आगरा) द्वारा हिंदी दिवस के स्वर्णिम अवसर पर देशभर के हिंदी साधकों, शिक्षाविदों, साहित्यकारों को “ काका कालेलकर महान हिंदी सेवक सम्मान —2023 “ प्रदान कर सम्मानित किया गया। इसी कड़ी में फतेहाबाद (आगरा) उपजिलाधिकारी कार्यालय में पी.सी.एस. विजय शर्मा (उप जिला. धिकारी —फतेहाबाद) को अंग वस्त्र, प्रशस्ति पत्र / सम्मान पत्र, स्मृति चिन्ह, सत् साहित्य आदि भेंट कर सम्मानित किया गया। उपजिला.

प्रशंसा की, साथ ही बृजलोक ट्रस्ट के प्रशंसा की, साथ ही बृजलोक ट्रस्ट के पदाधिकारियों को शुभकामनाएं भी दीं। उक्त सम्मान उन्हें संस्था अध्यक्ष — मुकेश कुमार ऋषि वर्मा, भूरीसिंह (समाजसेवी), एडवोकेट अवधेश कुमार निषाद मझवरा , एडवोकेट अरविंद आदि के कर कमलों से प्रदान किया गया। बृजलोक अकादमी साहित्य, कला, संस्कृति, समाज सेवा, पर्यावरण, शिक्षा, अध्यात्म आदि क्षेत्रों में राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीयस्तर पर सक्रिय संस्था है, जो नियमित तौर पर कार्यक्रमों का आयोजन कर राष्ट्र उन्नति के सेवा कार्यों में अनवरत क्रियाशील है।

दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार में मुकेश हुए सम्मानित



उदयपुर। जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ—राजस्थान के सभागार में दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार (ऑनलाइन व ऑफलाइन) व सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन गुरु विद्यापीठ हरियाणा व राजस्थान विद्यापीठ राजस्थान द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। इस कार्यक्रम में जनपद आगरा (उत्तर प्रदेश) निवासी युवा साहित्यकार मुकेश कुमार ऋषि वर्मा को शॉल व स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया। उन्हें यह सम्मान साहित्य साधना, स्वतंत्र पत्रकारिता व कला के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए प्रदान किया गया। उक्त कार्यक्रम

में राजस्थान व हरियाणा के लोक कलाकारों ने अपनी अद्भुत प्रस्तुतियों से दर्शकों का हृदय जीत लिया। एक दूसरे की संस्कृति को नजदीक से जाना—पहचाना। इस कार्यक्रम में देश भर के विद्वानों ने भाग लिया। कार्यक्रम बड़ी ही भव्यतापूर्ण तरीके से प्रारंभ किया गया। देशभर से आये शोधार्थी,कवि, वक्ता, कलाकार सभी ने अपनी —अपनी प्रस्तुतियां दी। कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए राजस्थान विद्यापीठ व गुरु विद्यापीठ सहित डॉ.नरेश कुमार सिहाग एडवोकेट, डॉ. महावीर गुड्डू, डॉ. विकास शर्मा, डॉ. सुलक्षणा अहलावत, डॉ. रिखब चन्द रॉका ‘कल्पेश’ आदि बधाई के पात्र हैं।

आवारा पशु गंभीर समस्या

देश में आवारा पशु राष्ट्रीय समस्या बन गये हैं। खास कर उत्तर भारत में इनकी समस्या काफी गंभीर है, जहां इनके हमले में कई लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ी है और लोगों के घायल होने का सिलसिला आए दिन सामने आता रहता है। आवारा कुत्तों से राहगीर जहां परेशान होते हैं, वहीं बन्दरों के उत्पात से लोगों को काफी नुकसान उठाना पड़ रहा है। छुट्टा गाय और सांड किसानों के लिए मुसीबत बने हुए हैं। सरकारें तमाम दावे और उपाय करती हैं लेकिन छुट्टा पशुओं की समस्या कम होने की जगह दिन—प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। हालांकि सर्वोच्च न्यायालय भी इनकी मुकम्मल व्यवस्था के लिए राज्य सरकारों को स्पष्ट निर्देश दे चुका है लेकिन अभीतक जो भी प्रयास और उपाय किये गये हैं वह नाकाफी साबित हो रहे हैं। यही कारण है कि आवारा कुत्तों के हमलेका मामला एक बार फिर सर्वोच्च न्यायालय की चौखट पर पहुंच गया है। सर्वोच्च न्यायालय ने यह उस समय उठा जब मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति डी. वाइ. चन्द्रचूड़ की अध्यक्षता वाली पीठ मुकदमों की सुनवाई कर रही थी। बहस कर रहे वकील के हाथ में पट्टी बंधी देखकर मुख्य न्यायाधीश ने पट्टी बांधने का कारण पूछा तो अधिवक्ता ने बताया कि उनपर आवारा कुत्तों ने हमला कर दिया था। अधिवक्ताओं ने इस मामले को गंभीरता से लेते हुए न्यायालय से सज्ञान में लेने की गुहार लगाई। हालांकि सर्वोच्च न्यायालय ने इसपर कोई आदेश नहीं दिया, लेकिन इस मामले पर विचार करने की बात जरूर कही है।



घर बड़े और दिल हो गये छोटे रिश्ते उनमे समाए तो कैसे बातें करते बड़ी मन हो गये छोटे रिश्तों में मिठास समाए तो कैसे घर बड़े और दिल हो गये छोटे रिश्ते उनमे समाए तो कैसे उम्र हो गई और दूर चले जाने लगे रिश्ते झुर्रियां भरे चेहरों को पहचान पाओगे कैसे घर बड़े और दिल हो गये छोटे रिश्ते उनमे समाये तो कैसे संदेश भरी बातों ने निकाल दी आस उम्र की यादो की हिचकिया देखों मोड़ रही मुँह अब कैसे घर बड़े और दिल हो गये छोटे रिश्ते उनमे समाए तो कैसे तकती रही राहें जिंदगी की कि साथ रहे मौत दस्तक देने लगी पूछा की देर कहा लगी घर बड़े और दिल हो गये छोटे रिश्ते उनमे समाए तो कैसे मेहमान अखरता अतिथि तुम कब जाओगे रिश्तों की दुनिया को तुम भला संभाल पाओगे कैसे घर बड़े और दिल हो गये छोटे रिश्ते उनमे समाए तो कैसे

संजय वर्मा “दृष्टि”
मनावर जिला —धार

एक दशक से भी अधिक वर्षों तक साहित्यिक सेवारत समाचार पत्र शाश्वत सृजन



उज्जैन। साहित्यिक समाचार पत्र ‘शाश्वत सृजन’ 100 वे अंक होने पर साहित्य उपासकों की और से हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं। प्रधान संपादक क्रमशः संदीप सृजन व श्रीमती अर्पिता जैन ए—99 विक्रमादित्य क्लॉथ मार्केट उज्जैन (म प्र) और उनके मंडल सदस्यों की अथक मेहनत , नाम मात्र शुल्क द्वारा राष्ट्रीय—अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पत्रिका व समाचार पत्र ने ख्याति प्राप्त की है और निरंतर एक दशक से भी अधिक वर्षों तक

साहित्यिक सेवा पाठकों को समाचार पत्र अर्पित कर रहा है। शोधपरक आलेख ,लेख ,कविता, गजल ,समीक्षा गीत ,हाइकु ,साहित्यिक समाचार ,दोहे आदि कई बेजोड़ भाषा शैली को आधार बनाकर समय पर प्रकाशन कर साहित्य जगत को अचंभित कर वर्चस्व एवं अस्मिता का पाठको पर ऐसा खुमार चढ़ा कि पत्रिका और समाचारस पत्र के प्रशंसक लाखों हो गए।संपादक भी चाहते थे कि उनकी पत्रिका और समाचार पत्र की छवि पर उज्जैन की अमिट छाप बनी रहे संस्कृति, सदभाव और मधुर व्यवहार का उनका साहित्य श्रम का प्रयास रंग लाया।

शब्द प्रवाह शाश्वत सृजन पेपर प्रधान संपादक संदीप सृजन एवं श्रीमती अर्पिता जैन युवाओं के लिए प्रेरणास्त्रोत बनकर उभर सामने आए हैं। सम्मान एवं पत्रिकाओं को महंगाई में निकालना बहुत ही कठिन कार्य है।घर परिवार के हर कार्य को छोड़ कर साहित्य को प्राथमिकता इन दोनों युवा साहित्यकार ने दी है। इन्होंने अपने जीवन के अमूल्य समय साहित्य को अर्पण किये है जिनका प्रत्यक्ष प्रमाण हम पत्रिका में मासिक एवं त्रैमासिक अंक में पाते आए है। शाश्वत सृजन पेपर में संपादक की भूमिका में आप दोनों खरे उतरे है हमें इसका गर्व है। सेतु बने ये साहित्यकार अपने आप में काफी बड़े इसलिए है की ये युवा है और कम उम्र में इतनी साहित्य ललक वाकई साहित्य के क्षेत्र में प्रेरणा स्त्रोत कहे जायेंगे। बढ़ाई कर रहा हूँ ये बात तब समझ आएगी जब किसी संपादक से श्रेष्ठ पत्रिका का पता पूछेंगे तब इन दोनों साहित्यकार का नाम सब की जुबों पर अपने आप सबसे पहले आ जायेगा। उज्जैन जिले के साहित्य दीपक अपनी साहित्य छवि से क्षेत्र का नाम रोशन कर साहित्यकारों में एक नई ऊर्जा भरते आ रहे है।



शिप्रा नदी की तरह प्रवाहमान बनाए रखा है।ऐसे पेपर का सभी उत्सुकता से इंतजार करते है। संदीप सृजन से पूछा—सब साहित्यकारों के प्रति आप का नजरिया क्या है—संदीप सृजन बोले कि —हम सदैव ऋणी इसलिए रहेंगे की छोटा —बड़ा में सबको रचना रचने में एक अधिकार दिया। अंक निकालना कोई बच्चों का खेल नहीं। यदि किसी की रचना किसी कारण नहीं प्रकाशित नहीं हुई तो उसका कोई कारण हो सकता है किन्तु संपादक हर साहित्यकार को यथा स्थान देते आरहें है।सहयोग राशि के बारे में इसलिए कहता हूँ कि कई प्रतिष्ठित पत्रिकाएं और अखबार आर्थिक अभाव में बंद होते देखे गए है। अब जरा खुशियों की बात करें तो शाश्वत सृजन के पाठको एवं सभी साहित्यकारों का पसंदीदा पेपर है क्यों न हम सब मिल कर पेपर के सौवें अंक पूर्ण होने का उत्सव मनाए।

संजय वर्मा ‘दृष्टि’



इनकी छाँव तले एक सुखद अनुभूति महसूस करते आ रहे है। वर्तमान कई व्यावसायिक पत्रिकाएँ मौजूद है परन्तु मान सम्मान और रचना प्रकाशन का हक् समानता वापरते हुए इन्होंने अपनी टीम के संग ये हक् अपने पास रख कर सदा सब के मन को सुखद अहसास करवायाछ वर्षों से साहित्य की सेवा कर ,साहित्य सम्मान कार्यक्रम, साहित्य पत्रिका द्वारा उज्जैन की भूमि पर साहित्य का पौधरोपण किया है।वो आज साहित्य का वटवृक्ष बनगया है जिसके आश्रय में अनेक साहित्य के पुजारी जुड़े कई तो जुड़कर अपना नाम अमर कर गए।शाश्वत सृजन ऐसा पेपर है जो साहित्यिक गतिविधियों में प्रकाशन की जान फूँक कर उसे



जी-20 के सफल आयोजन से प्रधानमंत्री ने सभी का किया धन्यवाद, कई देशों के साथ द्विपक्षीय की वार्ता

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लिए आज का दिन बेहद ही व्यस्त रहा। भारत जी20 की अध्यक्षता कर रहा है। आज जी20 बैठकों का दूसरा दिन था। आज सुबह से ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी विदेशी मेहमानों के स्वागत में जुटे रहे। सबसे पहले उन्होंने महात्मा गांधी की समाधि स्थल राजघाट पर विश्व के बड़े नेताओं का स्वागत किया और उनके साथ बापू को श्रद्धांजलि दी। इसके ठीक बाद प्रधानमंत्री भारत मंडप में पहुंचे जहां जी-20 की बैठक का आयोजन किया गया था। आज जी-20 की बैठक का तीसरा सत्र था जिसमें एक भविष्य पर चर्चा हुई। इसी दौरान प्रधानमंत्री ने ब्राजील को जी-20 की अगली अध्यक्षता सौंपी। इसी दौरान प्रधानमंत्री ने जी-20 के नेताओं से नवंबर में एक वर्चुअल मीटिंग में शामिल होने की अपील की ताकि जिन मुद्दों पर यहां चर्चा हुई है उसकी समीक्षा की जा सके। इसके बाद प्रधानमंत्री विभिन्न राष्ट्रों के राष्ट्राध्यक्षों के साथ द्विपक्षीय बैठकों में शामिल हुए।

सभी का धन्यवाद

बावजूद इसके प्रधानमंत्री शाम में भारत मंडप में मीडिया सेंटर पहुंचे थे। वह पूरी तरीके से ऊर्जा में दिख रहे थे। उनके चेहरे पर इस सम्मेलन की सफलता के भाव साफ तौर पर झलक रहे थे। मीडिया के सवालों का जवाब देते हुए उन्होंने सभी का धन्यवाद दिया। भारत में जी-20 की शानदार अध्यक्षता की है। इसमें हर भारतीय का



अहम योगदान है। साथ ही साथ इसे सफल बनाने के लिए जो लोग भी जुटे रहे, उनकी मेहनत भी रंग लाई है। यही कारण है कि प्रधानमंत्री सभी का आभार और धन्यवाद व्यक्त कर रहे हैं।

द्विपक्षीय बैठक

द्विपक्षीय बैठकों की शुरुआत फ्रांस के साथ हुई। प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने ट्वीट किया, "राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रॉन के साथ एक बहुत ही सार्थक दोपहर के भोजन की बैठक। हमने कई विषयों पर चर्चा की और यह सुनिश्चित करने के लिए तत्पर हैं कि भारत-फ्रांस संबंध प्रगति की नई ऊंचाइयों को छूएं।" जी-20 शिखर सम्मेलन से इतर पीएम नरेंद्र मोदी ने कनाडा के पीएम जस्टिन ट्रूडो से मुलाकात की। पीएम मोदी ने ट्वीट किया, "हमने विभिन्न क्षेत्रों में भारत-कनाडा संबंधों की पूरी श्रृंखला पर चर्चा की।" पीएम नरेंद्र मोदी ने दिल्ली में जी-20 शिखर सम्मेलन से इतर तुर्की के राष्ट्रपति रेसेप तैयप एर्दोगन से मुलाकात की।

पीएम नरेंद्र मोदी ने ट्वीट किया, "दिल्ली में जर्मन चांसलर ओलाफ स्कॉल्ज के साथ बहुत अच्छी मुलाकात। जी-20 शिखर सम्मेलन को अपने विचारों से समृद्ध बनाने के लिए उन्हें धन्यवाद दिया। साथ ही इस बात पर भी चर्चा हुई कि कैसे भारत और जर्मनी स्वच्छ ऊर्जा, नवाचार और एक बेहतर ग्रह की दिशा में मिलकर काम करना जारी रख सकते हैं।" प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने ट्वीट किया, "राष्ट्रपति यूं सुक येओल के साथ विचार-विमर्श व्यापक था। द्विपक्षीय संबंधों के संपूर्ण स्पेक्ट्रम की समीक्षा करते हुए, हम भारत और कोरिया गणराज्य के बीच वाणिज्यिक और सांस्कृतिक संबंधों को और बढ़ावा देने पर सहमत हुए।" प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और ब्राजील के राष्ट्रपति लुइज़ इनासियो लूला डी सिल्वे ने दिल्ली में द्विपक्षीय वार्ता की। पीएम नरेंद्र मोदी ने दिल्ली में जी-20 शिखर सम्मेलन से इतर कोमोरोस संघ के राष्ट्रपति और अफ्रीकी संघ (एयू) के अध्यक्ष अजाली असौमानी से मुलाकात की।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दिल्ली में जी-20 शिखर सम्मेलन से इतर नीदरलैंड के प्रधानमंत्री मार्क रूट से मुलाकात की।



गंगा आरती से अभिभूत हुए जी-20 के विदेशी मेहमान

वाराणसी। दुनियाभर के जी-20 ताकतवर देशों से काशी आए विदेशी मेहमानों ने जान्हवी के तट दशाश्वमेध घाट पर आयोजित विश्व विख्यात गंगा आरती देख अभिभूत हुए। शंखनाद, घंटी, उमरू की आवाज और मां गंगा के जयकारे ने मेहमानों को रोमांचित कर रही थी। मां गंगा की महाआरती भव्य स्वरूप में शुरू हुई। 09 अर्चकों ने मां गंगा की आरती उतारी, तो 27 रिद्धि-सिद्धि भी मौजूद रही व चंवर भी डोलाया। घाट को फूल मालाओं से व दीपकों से सजाया गया था। गंगा आरती की शुरुआत देवाधिदेव महादेव की प्रतिमा पर पुष्प वर्षा कर गणपति पूजन से हुआ। जी-20 देशों के विकास मंत्रियों सहित 200 विदेशी मेहमान प्रतिनिधियों का नेतृत्व भारत के विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर कर रहे थे। वास्तव में यह दुर्घट काशीवासियों सहित टेलीविजन पर लाइव प्रसारण देख रहे 140 करोड़ भारतीयों को गौरवान्वित व रोमांचित कर रहा था। आरती के दौरान विदेशी मेहमान ऐसे अभिभूत हुए कि वे भी सोफे पर बैठे-बैठे थाप दे रहे थे। बताते चले कि वाराणसी



में सबसे पहले गंगा आरती की शुरुआत साल 1991 में वाराणसी के दशाश्वमेध घाट पर हुई थी। तब से ही लगातार शाम के समय सूर्यास्त के बाद आरती की जाती है। गंगा नदी के पानी के साथ-साथ गंगा आरती की मान्यता धार्मिक तौर पर बहुत है। वैसे तो गंगा की कई जगह आरती होती हैं, लेकिन काशी की गंगा आरती खास होती है। यही वजह है कि देश के कोने-कोने और विदेशी लोग गंगा आरती करने और देखने आते हैं। जान्हवी के तट पर उनकी आरती के समय मेले जैसा माहौल होता है। यही कारण है जिनसे गंगा आरती की पहचान पूरी दुनिया में है और तमाम जगह से लोग इसकी एक झलक पाने के लिए यहां आते हैं।



जी.20 परिवार ने दी राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को दी श्रद्धांजलि



उम्रदराज होने के बावजूद रोज रियाज करती हैं आशा भोंसले

मुंबई। बॉलीवुड की जानीमानी पार्श्वगायिका आशा भोंसले आज 90 वर्ष की हो गयीं। महाराष्ट्र के सांगली गांव में 08 सितम्बर 1933 को जन्मी आशा भोंसले के पिता पंडित दीनानाथ मंगेशकर मराठी रंगमंच से जुड़े हुए थे। नौ वर्ष की छोटी उम्र में ही आशा के सिर से पिता का साया उठ गया और परिवार की आर्थिक जिम्मेदारी को उठाते हुए आशा और उनकी दीदी लता मंगेशकर ने फिल्मों में अभिनय के साथ साथ गाना भी शुरू कर दिया। आशा भोंसले ने अपना पहला गीत वर्ष 1948 में 'सावन आया' फिल्म चुनरिया में गाया। सोलह वर्ष की उम्र में अपने परिवार की इच्छा के विरुद्ध जाते हुये उन्होंने अपनी उम्र से काफी बड़े गणपत राव भोंसले से शादी कर ली। उनकी वह शादी ज्यादा

सफल नहीं रही और अंततः उन्हें मुंबई से वापस अपने घर पुणे आना पड़ा। उस समय तक गीतादत्त, शमशाद बेगम और लता मंगेशकर फिल्मों में बतौर पार्श्वगायिका कार्य कर रही थीं। वर्ष 1957 में संगीतकार ओ.पी. नर्तक अभिनेत्री 'हेलन' की आवाज समझी जाती थी। आशा ने हेलन के लिये तीसरी 'नया दौर' आशा भोंसले के सिने करियर मंजिल में 'ओ हसीना जुल्फों वाली', कारवां का अहम पड़ाव लेकर आई। वर्ष 1966 में 'पिया तू अब तो आज', मेरे जीवन



तीसरी मंजिल में साथी में 'आओ ना गले लगा लो ना' और आशा भोंसले ने डॉन में 'ये मेरा दिल यार का दीवाना' गीत आर. डी. बर्मन के संगीत में धुनो पर गाने में महारत हासिल करने वाली 'आजा आजा मैं' उमराव जान से अपने गाने के अंदाज में गाना को अपनी परिवर्तन किया। फिल्म उमराव जान से आवाज दी वह एक कैबरे सिंगर और पॉप सिंगर की जिससे उन्हें छवि से बाहर निकली और लोगों को यह अहसास हुआ कि वह हर तरह के गीत मिली। सात और गाने में सक्षम है। उमराव जान के लिये आशा ने 'दिल चीज क्या है' और 'इन आंखों की मस्ती के' जैसी गजलें गाकर आशा को खुद भी आश्चर्य हुआ कि वह इस तरह के गीत गा सकती है। इस फिल्म के लिये उन्हें अपने करियर का पहला नेशनल अवार्ड भी मिला।

राष्ट्रपति ने भव्य रात्रिभोज में जी20 नेताओं, प्रतिनिधियों का किया स्वागत

प्रिय पाठकों,
इस अंक में प्रकाशित सभी अग्रलेख, कथा-लघु कथा, कविता, व्यंग्य, विचार विमर्श लेखकों एवं विचारकों की अपनी कल्पना प्रसूति हैं। त्रुटियां मानवीय स्वभाव का अंग हैं जिनकी ओर ध्यान आकृष्ट करना एक जागरूक पाठक की विशेषता होती है।
अतः आप सभी सुधी विज्ञजनों, से ऐसी अपेक्षा की जाती है कि आप अपने पत्रों के माध्यम से इस अंक में प्रकाशित त्रुटियों की ओर ध्यान आकृष्ट भी समय-समय पर कराते रहें ताकि उन त्रुटियों की पुनरावृत्ति से बचा जा सके।
विवाद की स्थिति में न्यायालय, गोर खपुर का निर्णय अंतिम व मान्य होगा।
—व्यवस्थापक